ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 1 अंक : 1 अक्टूबर - नवम्बर 2010 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

धन्वन्तरि–त्रयोदशी एवं नरक–चतुर्दशी	डा. महेश पारासर	4
आपके प्रश्नों के समाधान	डा. महेश पारासर	5
आपकी वास्तु समस्या का समाधान	पं. अजय दत्ता	5
उपासना क्यों करनी चाहिए ?	डा. रचना भारद्वाज	6
क्यों प्रिय है लक्ष्मी जी को कमल	डा. श्रीमती शोनू मेहरोत्रा	7
दीपावली को विशिष्ट बनाने के लिये कुछ विशेष उपाय	डा. कविता के अगरवाल	8
'श्री'प्राप्ति का दुर्लभ पदार्थ पारद	श्रीमती रेनू कपूर	9
मानसिक रोगों में वरदान होम्योपैथी	डा. हेमेन्द्र विक्रम सिंह	9
वास्तु अनुसार रंग त्योहारों के संग	पं. अजय दत्ता	10
दीपावली पूजन	पं. दयानन्द शास्त्री	11
दीपावली पर किये जाने वाले अचूक प्रयोग एवं टोटके	पवन कुमार मेहरोत्रा	12
रोग नाशक मुद्रा	पं. विष्णु पाराशर	12
लक्ष्मी जी की उत्पत्ति–कब और कैसे	श्रीमती रेखा जैन	13
छुई–मुई काया–दूध की माया	डॉ. सतीश शर्मा	14
सफल विवाह के लिये गुण–मिलान ही काफी नहीं	मोनिका गुप्ता	15
उपवास करना भी आवश्यक है	सुरेश अग्रवाल	15
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	16–17
पराजय	विजय शर्मा	18
पूजा की सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य दर्शन में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा ए. डी. ऑफसैट, 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर 6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

धन्वन्तरि-त्रयोदशी एवं नरक-चतुर्दशी

पीयूषपाणि भगवान् धन्वन्तरि के नाम से कौन साक्षर अपरिचित होगा ? संसार के रोगर्त प्राणियों के लिए अमृत कलश लिए हुए समुद्र–मन्थन से उत्पन्न होने वाले धन्वन्तरि ने संसार में आयुर्वेद–विद्या का प्रसार कर जो महान् उपकार किया है वह किसी से छिपा नहीं है। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी उन्हीं भगवान् का जयन्ती दिन है, जिसे साधारण जनता 'धनतेरस' के नाम से खूब जानती है। अपनी कठिन तपश्चर्या, अविरत साधना और गम्भीर अन्वेषणपूर्ण अनुभूति से भरा आयुर्वेद सदृश महान् ज्ञान प्रदान करने वाले इस आचार्य के प्रति हिन्दू जाति कितनी ऋणी है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। इस दिन जहाँ हमें उस महान् आत्मा के गुणानुवाद गाकर उसके ऋण से मुक्त होने का प्रयत्न करना चाहिए, वहाँ साथ ही साथ धन्वन्तरि द्वारा प्रोक्त यह रहस्य भी गांठ बांध लेना चाहिए कि– **'' यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्। ''**

अर्थात्– जो पुरुष जिस देश में उत्पन्न हुआ है उस देश की भूमि में उत्पन्न जड़ी बुटियों से निर्मित औषध ही उसके लिए वस्तुतः लाभकारी हो सकती है।

अभी तक धन्वन्तरि त्रयोदशी का प्रचार मुख्यतया वैद्य समुदाय में ही है, किन्तु आज जब कि रोग को समूल नाश करने वाले आयुर्वेद के उपचार की उपेक्षा कर लोग स्वल्पकालिक लाभप्रद किन्तु परिणामें–दुःखद पाश्चात्य–चिकित्सा (Alopathy) की तरफ बुरी तरह आकर्षित होते जा रहे हैं तब आवश्यकता इस बात की है कि भगवान् धन्वन्तरि की यह जयन्ती आम जनता में खूब धूमधाम से मनाई जाए और जनता को देशी औषधियों के प्रति प्रेम उत्पन्न करने की प्रेरणा की जाए।

एक समय था जब पराधीनता के दिनों में विलायती माल के बहिष्कार की हवा चल रही थी और यह समझा गया था कि विलायती वस्तु को प्रोत्साहन देना देशद्रोह है और देश के धन को विदेश भेजना है। किन्तु आज उसके विपरीत न केवल जनता, किन्तु राष्ट्रीय सरकार भी स्वदेशीय आयुर्वेद प्रणाली को प्रोत्साहन न देकर पाश्चात्य–चिकित्सा को ही देश के लिये श्रेयस्कर समझे यह क्या कम शोक की बात है? अतः धन्वन्तरि जयन्ती पर सभी को प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम आयुर्वेदिक–चिकित्सा पद्धति की उन्नति में अधिक–से–अधिक सहयोग देगें।

इस दिन प्रदोष काल में यम के लिए दीपदान एवं नैवेद्य समर्पित करने से अकाल मृत्यु से रक्षा होती है। शास्त्रों का ऐसा वचन सर्वांश में सत्य ही है। मानव–जीवन को अकाल मृत्यु से बचाने के लिये दो ही वस्तु तो आवश्यक हैं। प्रकाश=ज्ञान और नैवेद्य= समुचित खुराक। यदि यह दोनों ही वस्तु आप खुले हाथों दान दें तो न केवल आपकी किन्तु सभी देशवासियों की अकाल मृत्यु से निःसन्देह रक्षा ही होगी।

नरक-चतुर्दशी

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी या छोटी दिवाली के नाम से पुकारा जाता है। आज के दिन भगवान् कृष्ण ने नरकासुर नामक अत्याचारी शासक का वध करके संसार को भीतिमुक्त किया था, इस विषय की स्मृति में यह पर्व मनाया जाता है, ऐसा पुराणों में उल्लेख मिलता है।

इस दिन प्रातःकाल समीपस्थ किसी भी नदी सरोवर के तट पर तैलाभ्यग्ङपूर्वक अपामार्गादि से अभिमन्त्रित जल में स्नान करना चाहिए। तैलाभ्यग्ङ का यह शास्त्रीय आदेश सर्वथा सहैतुक है। दीपावली के अवसर पर घरों को स्वच्छ किया जाता है; उन्हें सफेदी से पोता जाता है, झाड़ा–संवारा जाता है इससे शरीर का मैला हो जाना, उस पर कली आदि के छीटें पड़कर फट जाना तथा थकावट आ जाना स्वाभाविक ही है। इन सब उपद्रवों के उपशमनार्थ तथा शरीर में पुनः नवीन स्फूर्ति भरने के लिए तैलाभ्यंग कितना आवश्यक है इसे प्रत्येक व्यक्ति अच्छी तरह समझ सकता है।

महेश पारासर

अमृत वचन

जिसकी संगति से, बातचीत से, कार्यो से, उसकी योजना से ईश्वर व तुम्हारे बीच की दूरियाँ कम हों वहीं सत्संग है। जिससे ये दूरियाँ बढ़ें, वह असत् संग है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

पाठकों के पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार,

मैं पिछले 5 वर्षों से आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का प्रत्येक अंक अपने आप में उत्तम कोटि का होता है। लेख ज्ञानवर्धक और रोचक होते हैं। आशा है कि पत्रिका आने वाले दिनों में और अधिक सफलता प्राप्त करेगी।

श्री सत्यभान जैन– अलीगढ़

आदरणीय डॉ. पारासर जी,

भविष्य दर्शन द्विमासिक पत्रिका का अगस्त–सितम्बर का अंक प्राप्त किया। आप दीपावली पर क्या नया लेकर आ रहे हैं। कृपया यत्रों को प्रकाशित करने की कृपा करें।

मनोहर लाल शास्त्री –मुरैना।

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी कुण्डली के हिसाब से मेरा प्रमोशन कब तक होने की सम्भावना है। बताने की कृपा करें।

राजेश शर्मा –नई दिल्ली

उत्तर– आपकी कुण्डली के अनुसार निकट भविष्य में आपके प्रमोशन की सम्भावना नहीं है। उपाय हेतु आप मूँगा व मोती रत्न धारण करें और सूर्य की उपासना करें।

प्रश्न– कुछ कारणों से मेरा पुत्र इस वर्ष परीक्षा में फेल हो गया है। अगले वर्ष अच्छे नम्बरों से पास हो कुछ तरीका बतायें।

अनिल नागरथ– सोनीपत

उत्तर– बच्चे के गले में सरस्वती यंत्र धारण करवायें। एक पन्ना चांदी में सीधे हाथ की कनिष्ठा में धारण करवायें तथा रोजाना गणेश उपासना करवायें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या:– वास्तु अनुसार तुलसी का पौधा घर में कहाँ लगाना चाहिए बताने की कृपा करें।

राम मिलन शर्मा –ग्वालियर

समाधान– वास्तु के अनुसार घर में तुलसी का पौधा लगाना उत्यन्त शुभ माना गया है इसमें घर के वास्तु दोषों में कमी आती है। विज्ञान के अनुसार भी तुलसी का पौधा वातावरण के हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करता है। इसे घर के ईशान कोण में अथवा ब्रह्म स्थान में लगाना शुभ माना गया है तथा सुबह शाम इसकी पूजा अवश्य करनी चाहिए।

समस्या–बच्चों का कमरा किस रंग से रंगवाना चाहिए जिससे वह शरारत न करें और उनका मन पढ़ाई में लगे। उपाय अनुग्रहीत करें।

निर्मल कोहली – सोनीपत

समाधान– बच्चों के कमरे में गहरे रंगों का प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों के मन मस्तिष्क पर गहरा व प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यथासम्भव बच्चों के कक्ष में हल्के, आनन्ददायक और नेत्रों को सुकून देने वाले रंगों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। बच्चों के कक्ष में हल्का हरा, हल्का पीला और क्रीम रंग सर्वाधिक उपयुक्त रहता है। इसके अलावा अन्य हल्के रंगों के प्रयोग से बच्चों का मन मस्तिष्क शान्त व एकाग्र होता है।

पं. अजय दत्ता

मो. 9319221203

उपासना क्यों करनी चाहिए ?

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

यहां यह भी प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि आखिर हमें उपासना करनी ही क्यों चाहिए? यदि कहा जाए कि परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये!–तो इस उत्तर से भगवान् भी लौकिक पुरुषों की भांति प्रशंसा सुनने का शौकीन सिद्ध होने लगता है। यदि कहा जाय कि हम प्रभु के जैसे गुणों का स्मरण और मनन करते हैं, जो नाम जपते हैं वही गुण हममें विकसित हो जाते हैं तो आर्यसमाजियों के शब्दों में –'गुड़ कहने से जिह्वा मीठी क्यो नही होती ? और 'अग्नि' शब्द का जाप करने से जीभ क्यों नही जल पाती ?– इस प्रकार सभी मत–मतान्तर–वादी उपासना का जो भी प्रयोजन बताने चलेंगे उससे वे स्वयं ही अपने बनाए जाल में फस जाते हैं।

उपासना क्यो करनी चाहिये? इस प्रश्न का सीधा उत्तर सनातनधर्म यह देता है कि आप वैद्य, हकीम और डाक्टर की उपासना क्यों करते हैं? प्राड्–विवाक्, मुख्तार और वकील की उपासना क्यों करते हैं? कम से कम दोनों समय तुले तुलाए तीन पाव अन्न भगवान् की उपासना क्यों करते हैं? इन समस्त प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है, हम जब बीमार होते हैं मजबूरन वैद्य हकीम ढूँढने पड़ते हैं और मुकदमे में फँस जाते हैं तो बैरिस्टर साहिब के कमरे की खाक छानने के लिये विवश होते है, भूख के लिये अन्न और मल के परित्याग के लिये शौचालय देखना पड़ता है। बस जैसे अपनी अड़ी हुई बात ठीक करने के लिये पुरुष भूख मार कर अमुक 2 पुरुषों पदार्थो और तुच्छातितुच्छ द्रव्यों की उपासना करने के लिये वाध्य है, इससे भी कहीं अधिक विवशता से वह ईश्वर की उपासना करने के लिए लाचार हैं।

डाक्टर और वकील चाहे हजार बार भी चाहें कि कोई आसामी आए, पर हम केवल उनकी इच्छा पूरी करने के लिये जान बूझ कर रुग्ण और अभियुक्त बनने को प्रस्तुत नहीं होते। किन्तु जब हमारा अपना प्रयोजन आ पड़ता है तभी हम आसामी बनते हैं। ठीक इसी प्रकार भगवान् दिन–रात भी चाहे कि जीव मेरी शरण में आएँ परन्तु हम हतभाग्य तब तक उधर अपना मुख भी करने को तैयार नहीं होते जब तक कि हमारा अपना काम न अटका हो। सो भूख लगते ही हम अन्न–भगवान् की शरण में जाते हैं, प्यास लगते ही श्री वरुणदेव को ढूँढते हैं, शीत लगते ही अग्नि की उपासना करते हैं, गर्मी से पीड़ित होते ही वायुदेव का आश्रय लेते हैं इस प्रकार चौबीसों घण्टे हम अगणित उपासनाएँ करने के लिये बाध्य हैं। इसलिये हमारा उत्तर है कि उपासना भगवान् के किसी लाभ के लिये नहीं है, किन्तु यह तो जीव के ही अपने लाभ के लिये है। हमारी प्रार्थना सुनकर भगवान् फूल कर पुप्पा नहीं होते और यदि हम उपासना न करें तो वे दुबले नहीं पड़ते, किन्तु वह तो दोनों ही दशाओं में निर्लेप और निरंजन बने रहते हैं। परन्तु जैसे अन्न की उपासना न करने पर भूखा स्वयं यमराज का कलेवा बन जाता है, और जल की उपासना न करने पर प्यासे के प्राण पखेरु उड़ जाते हैं ठीक इसी प्रकार ईश्वर की उपासना न करने वाले व्यक्ति की आध्यात्मिक मृत्यु हो जाती है! नैतिक मृत्यु हो जाती है।

'' उपासना मानसिक रोगो की चिकित्सा ''

हम ' अण्डपिण्ड–सिद्धान्त8 में समझा आए है कि यह केवल जड़ शरीर ही हम नहीं है, किन्तु हमारा एक दूसरा चैतन्यरुप भी है जिसके आश्रय से यह जड़ पिण्ड प्रगतिशील बना हुआ है। हमारे शरीर में ज्वर, शोथ, पाण्डु, जलोदर, कास, श्वास, क्षय, अर्श और भगन्दर आदि अगणित व्याधियाँ होती हैं और सदैव कोई न कोई बनी ही रहती है। इसी प्रकार हमारे आध्यात्मिक कलेवर में भी काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, ईर्ष्या, दम्भ, द्वेष राग, अनुराग, संकीर्णता, छद्य, प्रतारणा, प्रमाद, दुराग्रह और आलस्य आदि अनेक रोग उत्पन्न होते है। शारीरिक रोगों का नाम शास्त्रकारों ने 'व्याधि' रक्खा है और आध्यात्मिक रोगों का नाम 'आधि' अमरकोश–कार प्रसिद्ध विद्वान् कहते हैं कि– **'आधिर्मानसी व्यथा'** अर्थात्– मानसिक व्यथा का नाम **'आधि'** है। वाग्भट्टसहिता में लिखा है कि–

रतस्तमश्च मनसो द्वौ च दोषावुदाहृतौ।।२१।।
धीधैर्यात्मादिविज्ञानं मनोदोषौषधं परम्।।२६।।

अर्थात्– रजोगुण और तमोगुण ये दो मन के दोष हैं। बुद्धि, धैर्य, और आत्मज्ञान ये तीन मन के रोगों की सर्वोत्तम औषध है। तो जैसे शारीरिक रोगों को दूर करने के लिए तत्तद् उपचारों की

शेष पेज 20 पर.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
भविष्य दर्शन®
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

क्यों प्रिय है लक्ष्मी जी को कमल

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

सौभाग्य एवं ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी को पुष्प में सर्वाधिक प्रिय कमल का फूल है। यह बात उनके किसी भी चित्र को देखने से स्पष्ट हो जाती है। कमल को भी सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है और कमल पर विराजमान देवी लक्ष्मी भी सौभाग्यदायिनी हैं। अतः उनका संबंध कमल से होना अनिवार्य प्रतीत होता है। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार लक्ष्मी को कमल से उत्पन्न माना जाता है। इसलिए उन्हें पद्मजा भी कहते है। प्रसिद्ध कला शास्त्री कुमार स्वामी भी लक्ष्मी के स्वरुप को पद्म गुहा, पद्मावाली तथा पद्मस्थिता आदि तीन भागों में विभाजित करते हैं। श्री सूक्त में लक्ष्मी को पद्मिनी, पद्महस्ता, पद्मसंभवा, पद्मवर्णा, पद्मनाभा, पद्मप्रिया, पद्मदलाय तथा पद्मा का नाम दिया गया है।

कमल के विषय में एक भारतीय पौराणिक कथा के अनुसार महाप्रलय, मतलब सागर मंथन के दौरान सबसे पहले कमल पुष्प की सृष्टि हुई। क्षीर सागर में शेष नागासन पर विराजे भगवन विष्णु की नाभि से एक कमल दंड पैदा हुआ, जो सागर से बाहर आया। तब उसमें एक पुष्प कली लगी हुई थी। इस कली के खिलने पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना करते हुए नर रुप में मनु तथा नारी रुप में शतरुपा का सृजन किया। इस प्रकार सृष्टि को आरंभ करने का श्रेय कमल को जाता है। प्राचीन काल से कमल सबका मन मोहता आया हैं वैदिक साहित्य में पुष्पों में कमल को सर्वोपरि रखा गया हैं। सिंधु घाटी की खुदाई से प्राप्त अवशेषों तथा मोहरों पर कमल कलियों, कमल दंड़ों तथा कमल पुष्पों का वर्णन मिलता है। इसके पश्चात सांची, भरहुत, अमरावती, मथुरा तथा गया आदि के पुरातनकालीन स्तंभों तथा तोरणों पर कमल का सजीव अंकन मिलता है। बाघ, बादामी तथा अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्रों में भी कमल का उपयोग बहुधा मिलता है। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के दौरान कमल पर आसीन लक्ष्मी की प्रतिमाएं भी कमल के साथ लक्ष्मी के घनिष्ठ संबंध की द्योतक हैं।

काव्य तथा श्रृंगार में भी कमल ने भरपूर प्रसिद्धि पायी है। समस्त जल पुष्पों की शान कमल है। वेदों के अनुसार रक्तिम, श्वेत एवं नील कमल क्रमशः ब्रह्म, विष्णु तथा महेश के प्रतीक माने जाते हैं। अतः अनेक स्थानों पर मंदिरों में भेंट पुष्प के रुप में कमल चढ़ाने की परंपरा आज भी विद्यमान है।

भारतीय भाषाओं के अनुसार कमल को अंबुज, जलज, पद्म, वारिज, सरोज, उत्पल, कोकनद, शतपत्र, तापरस, अब्ज, पुंडरीक तथा पुष्कर आदि नामों से पुकारा जाता है। अंग्रेजी में इसे 'लोटस' कहा जाता है। भारतीय शिल्प कला में कमल और लक्ष्मी के संग को अनेक रुपों में उभारा गया है। कमलासीन लक्ष्मी के चार हाथों में से दो हाथों में कमल, पुष्प अंकित रहते हैं। कई चित्रों में लक्ष्मी को कमल माला पहने दिखाया गया है। कमल की छवि पर आधारित शिल्प कला का एक बेजोड़ नमूना नयी दिल्ली स्थित बहाई मंदिर है।

कमल भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति का संदेशवाहक है। यह एक सात्विक पुष्प है। कीचड़ में उत्पन्न होते हुए भी यह शुद्ध होता है। जल में रहते हुए भी पानी की एक बूंद तक इसके पत्रों पर नही ठहरती।

कमल से एक संकेत यह लिया जाता है कि मनुष्य संसाररुपी कीचड़ में रहते हुए भी इसमें डूबे नही, बल्कि इससे निर्लिप्त हो कर ऐसे कार्य करे, जो उसे यश प्रदान करते हुए कमल की भांति ऊचा उठाए रखें।

शास्त्रों में लक्ष्मी के चार वाहन वर्णित हैं– गरुड़, उल्लू, हाथी और कमल। उल्लू लक्ष्मी का तामसिक वाहन है, गरुड़ सात्विक तथा हाथी और कमल राजसी वाहन हैं। इसलिए कमल को ऐश्वर्य से जोड़ा जाता है। लक्ष्मी भी धन–संपदा तथा ऐश्वर्य की देवी है। अतः समृद्धि के पर्याय रुप में कमल उन्हें अत्यंत प्रिय है।

❋ ❋ ❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 250/- **वास्तु परामर्श शुल्क रु.** 500/- **(मकान का नक्सा आवश्यक)**

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के भारतीय स्टेट बैंक खाते में 10039621088, आगरा शाखा में जमा

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
e-mail : mail@bhavishydarshan.in

दीपावली को विशिष्ट बनाने के लिये कुछ विशेष उपाय

डा. (श्रीमती) कविता के अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

हर कार्य को करने का एक विशेष दिन समय, स्थान एवं मुहूर्त होता है यदि इस दिन विशेष पर कुछ खास उपाय किये जाये तो उसका सुखद परिणाम प्राप्त होता है और जीवन में खुशहाली एवं सुख समृद्धि आती है, ऐसा ही विशेष दिन है दिपावली का।

दीपावली पर खुद करे वास्तु सुधार

1. नरकचौदस या छोटी दिवाली वाले दिन घर या कार्यस्थल को पानी से धुलवाना चाहिये, नही तो कम से कम गीला पोंछा अवश्य लगाना चाहिये, विशेषकर उत्तर–पूर्व दिशा में । ईशान दिशा स्वच्छ होने से ईश्वर की कृपा दृष्टि प्राप्त होती है।

2. यदि आपके पास कम काम में आने वाला या कभी–कभी काम में आने वाला सामान है उसे दक्षिण–पश्चिम दिशा में बंद में रखें

3. घर में सभी मांगलिक चिन्हों जैसे पंचागुलक, स्वास्तिक, ऊँ, एक ओंकार आदि है उन्हें झाड़ पोंछकर साफ करें या पुनः स्थापित करें।

4. मंदिर को साफ करें, हो सके तो कम से कम मंदिर में रोगन करायें। पूजाघर में श्वेत या हल्के पीले रंग या हल्के नीले रंग से रगवाऐं। श्वेत रंग शांति, दानी, सच्चाई, पवित्रता का प्रतीक है। हल्का पीला रंग आध्यात्मिक प्रगति, चित्तशुद्धि, पवित्र भावनाओं का प्रतीक है। हल्का नीला रंग आध्यात्मिक, जागृति हेतु अपना प्रभाव दिखाता है।

5. पूजन स्थल के नीचे किसी प्रकार की दरार न हो। यदि है तो ठीक करवाऐं अन्यथा लाल या सफेद कपड़ा लकड़ी की चौकी पर बिछाकर उस पर प्रतिमाएं रखे। भगवान के वस्त्रों को बदलें व नई मालाएं पहनाएं। दीपावली की रात को मंदिर की कम से कम वत्ती जली रहने दें।

6. पूजन के लिये मूर्तियों का मुख पूर्व या पश्चिम दिशा की ओर रखना श्रेष्ठ होता है। यह विशेष ध्यान रखे कि चित्रित लक्ष्मी की आकृति का स्वरुप बैठी हुई लक्ष्मी का होना चाहिये खड़ी हुई लक्ष्मी का नही, पूजन ईशान दिशा के कक्ष में करें।

7. पूजन में गणपति के समक्ष केले, लड्डू तथा जामुन व लक्ष्मी जी को अनार, कमलगट्टे व कमल के फल, पाँच मेवा या अन्य पकवानों का भोग यथाशक्ति लगाएं।

8. पूजन में यथाशक्ति कुछ नये रुपयों के नोट व चाँदी का सिक्का रखें। नये नोटों को पूजन के पश्चात स्वयं उपयोग किया जा सकता है। लक्ष्मी जी के बाई ओर गणपति स्थापित करें।

9. पूजन में कच्चा दूध अवश्य प्रयोग करें, जिससे गणेश–लक्ष्मी को छीटे देकर स्नान कराया जा सकें।

10. दीपावली पूजन के मुख्य दीपक को शुद्ध घी से रात भर जलाऐं। पूजन के पश्चात वास्तु देवता जोकि स्थान देवता भी है उनसे प्रार्थना करनी चाहिये कि हे देव! यह स्थान हमारे परिवार के लिये कल्याणकारी हो, ऐसा आर्शीवाद हमें प्रदान करें। इस दिन वास्तु यंत्र को भी स्थापित किया जा सकता है।

11. पूजन के पश्चात मुख्य कक्ष में, तुलसी के पौधे के समीप, मंदिर में, श्यन कक्ष में, आंगन में, शौचालय, रसोई, मुख्य द्वार, स्टोर आदि सभी कमरों में एक–एक दीप अवश्य रखना चाहिये।

12. दीपावली के दिन–रात को चांदी की कटोरी मे माँ लक्ष्मी के पूजन स्थान पर कपूर जलाएं, इससे कई दैहिक, दैविक एवं भौतिक संकटो से मुक्ति मिलती है।

दीपावली पर स्वयं करे सुख-समृद्धि के उपाय

1. दीपावली के दिन स्फटिक माला या लाल चदंन की माला लाकर गंगाजल से धोकर, नित्य 'श्री लक्ष्मयै नमः' का जाप करने से आर्थिक उन्नति होती है।

2. दीपावली के दिन दोपहर के समय हल्दी की गाँठ को, पीले कपड़े में रखकर, **'वक्रतुण्डाय हुं'** का 108 बार जाप करके, तिजोरी में रखने से व्यपार में वृद्धि होती है।

3. दुकान में वृद्धि हेतु दुकान खोलने के बाद सफाई करके श्री यंत्र, कुबेर यंत्र, और लक्ष्मीजी के चित्र के आगे धूप जलावें प्रणाम करें तथा 108 बार मंत्र **'श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः'** का जाप करें। उसके बाद दुकानदारी प्रारम्भ करें। इससे ग्राहको एवं बिक्री में वृद्धि होगी।

4. पीपल के वृक्ष की जड़ में तेल का दीपक जलाएं फिर घर वापिस आ जाऐं, पीछे मुडकर न देखें लक्ष्मी की प्राप्ति होगी।

5. श्यामा तुलसी के चारों ओर उगने वाली घास को पीले वस्त्र में बाँधकर दीपावली के दिन अपने कार्यस्थल में रखने से उन्नति होती है।

6. दीपावली के दिन घर की छत से बेकार का सामान हटाने से आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

7. दीपावली की रात्रि में कच्चा सूत लेकर शुद्ध केसर से उसे रंगकर अपने कार्य स्थान में रखने से उन्नति हाती है।

8. दीपावली के दिन अपने पूर्वजो की याद में 11 लोगों को खाना देने से घर में सुख–शांति बनी रहती है।

9. दीपावली पर श्री महालक्ष्मी पूजन के बाद श्री सूक्तम के 12 पाठ करे तथा एक माला लक्ष्मी यंत्र की जपे और प्रतिदिन पूजा के समय एक माला जाप करते रहने से धन सम्बन्धी कठिनाइयां दूर होती है।

10. पूजन के बाद नित्य प्रातः एवं संध्या समय प्रत्येक कमरे में शंख को बजाने से घर में लक्ष्मी का वास होता है।

इस प्रकार कुछ सरल एवं साधारण उपाय करके अपनी इस वर्ष की दिपावली को विशेष बनाऐं।

सभी पाठकों को दीपावली की शुभकामनाओं सहित।

❋❋❋

'श्री' प्राप्ति का दुर्लभ पदार्थ पारद

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

धर्मशास्त्रों के अनुसार दीपावली का पर्व व्यक्ति को निर्धनता से मुक्तकर सुखी व सम्पन्न बनाने वाला पर्व कहा गया है क्योंकि इस दिन व्यक्ति परिवार के लिये यंत्र, मंत्र, व तंत्र की सहायता के द्वारा देवी लक्ष्मी की कठोर साधना करके स्वयं को धन सम्पन्न बनाना चाहता है और उसकी पूजा अर्चना से प्रसन्न होकर इस दिन देवी लक्ष्मी व्यक्ति को ऐश्वर्यवान व सौभाग्यशाली बनाकर धनोपार्जन में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करती है। इसी प्रकार कार्य को निर्विघ्न सम्पन्न करने के लिये जीवन को मंगलमय व शान्तिपूर्वक बनाने के लिये बुद्धिदायक गणपति की अराधना भी परमावश्यक मानी गई है।

श्री अर्थात लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री पर्व एक ऐसा विशेष पर्व है जिस पर्व पर कुछ शुभ ग्रहों की रश्मियाँ सर्वाधिक मात्रा में पृथ्वी पर आती है और इस कारण श्री पर्व का महत्व बढ़ने से व्यक्ति द्वारा किये गये उपाय उसके लक्ष्य को सफल मनोरथ से पूर्ण बनाते हैं धन संबंधी दोष दूर करने के लिये अनके उपायों में एक उपाय अध्यात्मिक वस्तु पारद को विभिन्न रुपों में प्रयोग कर स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति में एक सफल साधना मानी गई है। पारद से बनी वस्तुयें घर, व्यवसाय, वाहन आदि में स्थापित करने से व्यक्ति को दैविक शक्ति का आलौकिक लाभ प्राप्त होता है। पौराणिक शास्त्रों में भी कहा गया है कि हजारों गाय व लाखों स्वर्णमुद्रा का दान करने से जो पुण्य की प्राप्ति होती है वही पुण्य रुपी शुभ फल पारद वस्तु के केवल दर्शन मात्र से प्राप्त होता है। पारद को धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। शिव पुराण में भी इसे शिव का पौरुष कहे जाने के कारण यह सभी देवी देवताओं द्वारा वंदनीय माना गया है। पारद वस्तु के असीमित गुण इसे अलौकिक दुर्लभ व मूल्यवान के साथ–साथ अत्यन्त शुद्ध भी बनाते हैं।

जब व्यक्ति शुभ मुहूर्त में पारद विग्रह को स्थापित कर आर्थिक व अध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा से इसके सम्मुख इष्ट साधना व उपासना करता है तो वह अलौकिक शक्ति से सम्पन्न हो जाता है और ये शक्तियाँ उसकी मनोकामना को पूर्ण करने में सक्षम होती है। पारद निर्मित प्रत्येक विग्रह अपने आप में सौभाग्य दायक होता है चाहे वह पारद लक्ष्मी, पारद गणेश, पारद श्री यंत्र, पारद पादुका अथवा पारद शिवलिंग व पारद पिरामिड के रुप में बना हो इन सभी में लक्ष्मी तत्व समाहित होता है। अतः पारद एक ऐसी वस्तु है जो जिसके पास किसी भी रुप में हो वह उस व्यक्ति को बुद्धिमान व ऐश्वर्यवान बनाकर सफलता प्रदान करती है।

शेष पेज 22 **पर**.....

मानसिक रोगों में वरदान होम्योपैथी

Dr. Hemendra Vikram Singh
Skin Child & Chronic Disease Specialist
B.H.M.S (Gold Med.), H.M.D (London), M.B.A.H.(Switzerland)

होम्योंपैथिक दवाओं का परीक्षण स्वस्थ मनुष्यों पर किया जाता है जिससे कि प्रत्येक औषधि के शारीरिक एवं मानसिक रुप से पड़ने वाले प्रभाव का होम्योपैथिक चिकित्सक को पता होता है। अन्य पैथियों में दवाओं का परीक्षण जानवरों पर होने के कारण यह सुविधा उपलब्ध नही है।

क्योंकि होम्योपैथी में मानसिक लक्षणों पर औषधि के प्रभाव का सटीक वर्णन स्वयं स्वस्थ मनष्यों द्वारा बताया जाता है। इसीलिये होम्योपैथी द्वारा डिप्रेशन, हिस्टीरिया, मिर्गी के दौरे, सीजोफ्रेनिया, लकवा, याददाश्त की कमजोरी, सेरिव्रलपेल्सी आत्सेसित कम्पल्सिव डिसआर्डर, पार्किसन्स डिजीज, एवं सभी प्रकार की अन्य मानसिक बीमारियों का इलाज सफलता पूर्वक किया जाता है।

होम्योपैथिक दवाओं से शरीर पर किसी तरह का कोई दुष्प्रभाव नही पड़ता। अपनी इसी विश्वसनीयता से होम्योपैथी आज विश्व की दूसरे नंबर की चिकित्सा पद्धति बन चुकी है। विश्वभर में 55 करोड़ से अधिक लोग होम्योपैथिक चिकित्सा का उपयोग कर रहे हैं जिनमे से 48% लोगों का मानना है कि होम्योपैथी उनके लिये सही विकल्प रही है।

होम्योपैथिक दवाओं का सेवन गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों के लिये भी पूर्ण रुप से सुरक्षित है। गर्भकाल के दौरान होम्योपैथिक दवा के सेवन से, प्रसव प्रक्रिया आसान होती है एवं सीजेरियन से बचाव संभव है। गर्भकाल के दौरान होने वाली समस्याओं के सम्पूर्ण निदान के लिये होम्योपैथिक दवायें सर्वथा उपयुक्त है। अधिकांश दवाओं के साथ किसी तरह के परहेज की कोई आवश्यकता नही होती। होम्योथिक दवायें तुरन्त प्रभावी रुप से नये, पुराने एवं जटिल रोगों में कार्य करती है एवं इनका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नही पड़ता है। ❋ ❋ ❋

वास्तु अनुसार रंग त्योहारों के संग

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

वास्तु शास्त्र में भवन में रग रोगन करवाने का विशेष विधान दिया गया है। इसमें प्राकृतिक तत्वों से बने रंगों को श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ये रंग सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं, जबकि कृत्रिम रंगों का उपयोग करने की सलाह कम दी जाती है। तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि कृत्रिम रंग नकारात्मक ऊर्जा के साथ ही साथ हानिकारक रसायनों का भी सम्मिश्रण होते है, परन्तु वर्तमान में प्राकृतिक रंगों का उपयोग नहीं किया जाता है, अतः इसके दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें घर में मनोनुकूल तथा वास्तु अनुकूल रंगों का चयन करना चाहिए।

वास्तु में प्रत्येक व्यक्ति एवं कार्य के अनुसार रंगों का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। यथा गहरे रंग जैसे लाल, नारंगी और पीला आदि मस्तिष्क के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। भूख बढ़ाते हैं तथा पाचन शक्ति में भी वृद्धि करते हैं। साथ ही साथ ये शक्तिवर्द्धक भी हाते हैं, अतः घर में केवल रसोई में ही ऐसे रंगों का प्रयोग किया जा सकता है।

प्रत्येक क्षेत्र के तत्वों से मेल खाता रंग ही उपयोग में लिया जाना चाहिए। जहाँ तक हो सके विपरीत तत्वों को नजरंदाज करना चाहिए। उदाहरण के लिए कमरे के दक्षिणी क्षेत्र में चटकीले (अग्नि) रंगों का प्रयोग जैसे लाल, संतरी या फिर गुलाबी और जामुनी का प्रयोग किया जाना चाहिए। अग्नि का विपरीत जल होता है, जो कि पूर्वी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। इसलिए काले, नीले और ग्रे रंगों का चयन नहीं करना चाहिए।

प्रस्तुत आलेख में हम वास्तु के नियमों के आधार पर घर के समस्त भागों में प्रयुक्त रंगों का विवेचन कर रहे हैं । इन ज्योतिषीय एवं वास्तु आधारित नियमों को अपनाकर आप निःसंदेह अपने घर में आनंद और खुशहाली प्राप्त कर सकेंगे।

ड्राइंग रुम– यह घर का प्रमुख कक्ष होता है। इसे स्वागत कक्ष भी कहा जाता है। इसके आधार पर इसकी साज–सज्जा अत्यन्त आवश्यक हो जाती है तथा इस पर ध्यान भी दिया जाता है। इस कक्ष में यदि हम वास्तु नियमों के आधार पर रंग–रोगन करवाएँ, तो गृहस्वामी को अत्यधिक लाभ पहुँचेगा तथा उसकी प्रभावशीलता में भी वृद्धि होगी। इस कक्ष में अतिथि के साथ वार्तालाप करते समय गृहस्वामी या घर का कोई भी सदस्य अपने–आप में प्रभावशाली व्यक्तित्व का निर्माण भी का पाएगा।

इस कक्ष में हल्के रंगों का प्रयोग करने का प्रचलन है। हल्के रंगों में क्रीम कलर, हल्का हरा आदि हल्के रंग ही प्रयोग में लाए जाने चाहिए।

हल्के रंगों का प्रयोग करने से ये नेत्रों के लिए तो मनोनुकूल रहते ही है, साथ ही व्यक्ति का स्वभाव भी प्रभावित होता है, परन्तु वृषभ, सिंह, तुला राशि, या लग्न वाले व्यक्तियों को क्रीम कलर प्रयोग में नहीं लेना चाहिए। मेष, वृश्चिक, धनु और मीन राशि एवं लगन वाले व्यक्तियों के लिए यह अत्यधिक शुभकारी हो सकता है।

इसी प्रकार हलका हरा रंग भी स्वागत कक्ष में प्रयोग में लाया जा सकता है। यह रंग हरियाली का प्रतीक है तथा इस रंग का प्रयोग करने से निवास करने वाले व्यक्ति ताजगी महसूस करते हैं तथा वे तनाव मुक्त भी रहते हैं। वृषभ, मिथुन, कन्या, तुला एवं मकर राशि तथा लग्न वाले व्यक्तियों के लिए यह अत्यधिक शुभकारी है।

नीला रंग वैराग्य का प्रतीक है। यह शनि ग्रह का प्रतीक माना जाता है एवं पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह रंग मानसिक शांति और शारीरिक शीतलता भी प्रदान करता है। यह रंग मेष, सिंह और वृश्चिक राशि और लग्न वाले व्यक्तियों को नही करवाना चाहिए। मकर और कुंभ लग्न और राशि वाले व्यक्तियों के लिए यह अत्यधिक उपयुक्त है। वृषभ और तुला राशि वाले व्यक्ति भी इसे करवाकर भाग्य में वृद्धि कर सकते हैं।

लाल अथवा गुलाबी रंग मंगल का प्रतीक माना जाता है और यह दक्षिण दिशा का प्रतिनिधत्व करता है। यह रंग उत्साह, ओज एवं शक्तिवर्द्धक माना जाता हैं यह रंग मकर, कन्या और कुंभ राशि वाले व्यक्तियों को कदापि नहीं करवाना चाहिए।

सफेद रंग सूर्य का प्रतीक माना जाता है एवं यह पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह रंग शांति का प्रतीक है और ऐसा रंग है कि यह रंग कभी भी पुराना नही लगता है। इसलिए इस रंग का प्रचलन सर्वाधिक पाया जाता है। यह रंग वृषभ, कर्क और तुला राशि/लग्न वाले व्यक्तियों के लिए अधिक उपयुक्त है तथा यह सर्वाधिक भाग्यवर्द्धक भी माना जाता है।

बैड़रुम– यह ऐसा कक्ष है जिसमें व्यक्ति दिन का 1/3 भाग व्यतीत करता हैं इस कक्ष की साज–सज्जा जहाँ व्यक्ति की निद्रा, आदतों और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है, वहीं व्यक्ति के दाम्पतय सुख को भी प्रभावित करती है।

इस कक्ष मे गुलाबी रंग प्रेम और उमंग का प्रतीक माना जाता है। यह आँखों को सूकून प्रदान करता है। इस रंग का प्रयोग मकर और कुंभ राशि वाले व्यक्तियों को नही करवाना चाहिए। यह रंग मेष, सिंह और वृश्चिक राशि वालों के लिए अत्यधिक उपयुक्त रहता है। कर्क और धनु राशि/लग्न वाले व्यक्तियों के लिए भी यह रंग उपयुक्त हो सकता है। इस कक्ष में सफेद रंग शांति प्रदान करता है तथा पूरे दिन के कार्य के कारण हुई थकान को कम करने के लिए यह रंग अत्यधिक सफलतादायक है। वृषभ, कर्क और तुला राशि/ लग्न वाले व्यक्तियों के लिए यह रंग शुभ रहता है। क्रीम कलर आँखों को सुकून प्रदान करता है। इस रंग का प्रयोग धनु और मीन राशि वाले व्यक्तियों को करवाना अत्यधिक शुभ हैं। मिथुन, कर्क और वृश्चिक लग्न/राशि वाले भी इसे करवा सकते हैं।

बैडरुम में आसमानी रंग का प्रयोग भी किया जा सकता है। यह रंग कामशक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इस कारण यह रंग बैडरुम के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। वृषभ, तुला, मकर एवं कुंभ राशि/लग्न वालों के लिए यह शुभ एवं भाग्यशाली है।

बच्चों का कक्ष– बच्चों के कक्ष में गहरे रंगों का प्रयोग कदापि

शेष पेज 20 पर.....

दीपावली पूजन

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोधा संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

दीपावली के दिन घनी काली अंधेरी रात होती हैं। काली अंधेरी रात या कोई भी अंधकार कष्ट का प्रतीक माना गया हैं क्योंकि अंधकार में मार्ग दिखाई नहीं देता, व्यक्ति रास्ता भटक जाता हैं। मन में जब तक दुखः का, गम का अंधेरा रहेगा तब तक व्यक्ति सफलता प्राप्त नहीं पा सकेगा। अंधेरे से उजाले की ओर आने की प्रक्रिया को ही अमावस्या शांति कहते हैं। जितनी अधिक काली अंधेरी रात होती हैं वह इस बात की प्रतीक हैं कि अब आगे जल्दी रोशनी पहर आने वाली हैं। जैसे–जैसे सुबह नजदीक आती हैं, अंधेरा और बढ़ता जाता हैं। जैसे–जैसे सुबह की किरण फूटने वाली होती हैं, व्यक्ति दुनिया की सुध–बुध भूलकर चैन से सोना चाहते हैं। सुबह का आना इस बात का प्रमाण हैं कि काई भी अंधेरा अधिक समय तक नहीं टिकता। अधिक गम, अधिक खुशी अधिक समय तक नहीं टिकती। अत्यधिक गम इस बात का संकेत हैं कि अब जल्दी ही खुशी मिलने वाली हैं, अत्यधिक नींद इस बात का संकेत हैं कि सपनों की दुनिया के आगे वास्तविक उपलब्धि हाथ से जाने वाली हैं। कहा भी गया हैं कि **जो सोवत हैं वो खोवत हैं, जो जागत हैं वो पावत हैं** अर्थात ब्रह्म मुहूर्त के बाद सोना जिंदगी में बहुत कुछ खो देने का संकेत कहा गया हैं।

दीपावली की अमावस्या के दिन लकड़ी की दो चौकी लें। जिस दिन दीपावली की अमावस्या पड़ें उस दिन उस समय अवधि से पहले सरसों के तेल का एक बड़ा दिया जला देवें और शनिदेव की तस्वीर, प्रतिमा या मंत्र के आगे तेल का दिया रखकर यह प्रार्थना करें कि हमारे घर में लक्ष्मी के आगमन में , सफलता में जो भी विघ्न , बाधा, परेशानी, रूकावट आ रही हैं वह दूर हो जाये और उस दिये को अखण्ड जलने दें। दूसरे दिन के दीपावली पूजन हो जाने तक उसे जलाना चाहिए। जब दीपावली पूजन का मुहूर्त हो उस समय लकड़ी की एक चौकी पर महालक्ष्मी माता की तस्वीर रखें और दूसरी चौकी पर शनि देव की तस्वीर, काला वस्त्र चौकी पर बिछाकर रखें। लक्ष्मी जी वाली चौकी पर रक्त लाल रंग का वस्त्र बिछायें। लक्ष्मी जी की हल्दी, कुमकुम, अष्टगंध, मिष्ठान, खिल–बताशे, पकवान व खीर–पूड़ी अर्पण कर विधिवत पूजन करें। उन्हें लाल पुष्प व लाल वस्त्र अर्पण करें। शनिदेव को काले अक्षत, नीले पुष्प से पूजन करके, उड़द व तिल से बने पकवान उन्हें भोग में अर्पण करें। जब भोग लगायें तब जल भी साथ में रखें। एक–एक सूखा नारियल और एक–एक पानी वाला नारियल दोनों चौकी पर रखें। सामने बैठकर एक माला शनि महामंत्र की और एक माला महालक्ष्मी मंत्र की जाप करें। मंत्र जाप प्रत्येंक सदस्य भी अपने–अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए व जीवन में वैभव की प्राप्ति के लिए कर सकते हैं। जो मंत्र जाप करने हैं वे निम्न हैं : –

शनि महामंत्र – **ऊँ नीलाजंन समाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजम्। छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।**

महालक्ष्मी मंत्र – **ऊँ श्रींम ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद श्रींम ह्रीं श्रींम ऊँ महालक्ष्मये नमः।**

इन दोनों मंत्रों के जाप के पूर्व अपने गुरू का व गणपति जी का मंत्र भी 11–11 बार पाठ कर लेवें। मंत्र पाठ के बाद आरती करें, कपूर जलायें। फिर जो भी प्रसाद शनिदेव के आगे रखा हैं और जो भी लक्ष्मी जी के आगे रखा हो वह सभी अलग–अलग कपड़े में बाँध दें। शनिदेव के काले वस्त्र की चौकी पर उड़द, तिल, गुड़ के जो भी पकवान उड़द, तिल, गुड़ के साथ रखे थे उन्हें काले कपड़े में बांध दें और लक्ष्मी जी वाला सारा सामान लाल कपड़े में बांध देवें मगर दोनों चौकी से पानी वाला नारियल अलग निकाल कर सामान को बांधना हैं। काले कपड़े वाला सामान किसी गरीब को या भिखारी को उसी रात्रि में दे दें साथ में एक भोजन का बड़ा पैकेट भी उसे भोजन करने के लिए देवें। लाल कपड़े वाला सामान किसी भी मंदिर के पुरोहित को दे दें। पानी वाले नारियल जो अलग निकाले थे दोनों अपने घर के दरवाजे पर यह कहकर फोड़े कि मेरी जिन्दगी में धन प्राप्ति में , सफलता प्राप्ति में जो भी बाधा आ रही हैं उसे दूर करने के लिए हम यह श्रीफल बलि दे रहे हैं। नारियल फोड़ने के बाद उसके दोनों टुकड़ों में शक्कर में थोड़ा सा दो चममच घी मिलाकर भर देवें। भाक्कर से भरे यह नारियल अपने घर के अंदर या बाहर पीपल के बड़े पेड़ के नीचे ऐसी जगह पर अलग–अलग रखें जहाँ पर खूब चीटिंया लगनी चाहिए। इस प्रकार से शनिदेव का प्रकोप इस दिन शांत होता हैं और महालक्ष्मी जी शीघ्र प्रसन्न हो जाती हैं। यदि घर में या घर के आस–पास कोई विधवा महिला हो तो दीपावली वाले दिन उसे भोजन, उपहार, वस्त्र आदि श्रृद्धा से अवश्य देना चाहिए। ऐसा करने से सुहाग अमर होता हैं और परिवार में सुख बढ़ता हैं।

दूसरा उपाय यह हैं कि शनि मंत्र का और श्री यंत्र का अभिशेक पंचामृत से करें फिर शुद्ध जल में धोकर व पोंछकर, अष्टगंध, केसर, चंदन से यंत्रों को लेपित करें। पुष्प, धूप, दीप, अगरबत्ती से आरती करके प्रसाद, मिष्ठान का अर्पण करें। दोनों यंत्रों के आगे अलग–अलग थाली में एक व्यक्ति की खुराक के बराबर भोजन सजाकर रखें। रात्रि भर भोजन रखा रहने दें। दूसरे दिन वह भोजन श्रृद्धा से गाय को खिलाकर आयें।

तीसरा उपाय यह हैं कि दीपावली के दिन शनिदेव की प्रसन्नता व लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्ति हेतु महालक्ष्मी पूजन के मुहूर्त में हवन जरूर करें। हवन के लिए घर में ही यज्ञ कुण्ड जैसा बनाकर या किसी लोहे या ताँबे के पात्र में आम की लकड़ी, गोबर के कण्डे जलाकर घर में ही चारु सामिग्री तैयार करके हवन करें। ये हवन की चारू सामग्री जो तिल , भाक्कर , घी , चावल से मिलकर बनती हैं पूरे 108 बार शनि महामंत्र की इससे आहुति दें और 108 बार महालक्ष्मी मंत्र की इससे आहुति दें। शनिदेव को बाद में उड़द, तिल, गुड़ से बने पकवान अग्नि में समर्पित करें। लक्ष्मी जी को 33 बार खीर–पूड़ी की आहुति समर्पित करें। फिर एक–एक करके सूखा नारियल दोनों देवी–देवताओं के मंत्र के साथ पूर्णाहुति के लिए अग्नि में डालें। गुरू, गणपति जी के लिए घी की आहुति दें। यह बड़ा प्रभावकारी उपाय हैं। ❋❋❋

दीपावली पर किये जाने वाले अचूक प्रयोग एवं टोटके

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिष प्रभाकर एवं अंक विशारद
फोन. 9412257617, 0562-2571618

प्रिय पाठको, दीपावली की आप सभी को हार्दिक शुभकामनायें दीपावली पर धन प्राप्ति की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति के मन में होती है। इसके लिये वह विभिन्न प्रकार के प्रयोग करता है। प्रत्येक व्यक्ति की यह प्रबल इच्छा होती है कि उसके प्रत्येक कार्य अपने आप बनते जायें व धन में चार गुना वृद्धि हो। व्यापार दिन दुगनी रात चौगुनी प्रगति करें। इस अंक में मैं आपको दीपावली की रात्रि को किये जाने वाले कुछ अचूक प्रयोग एवं टोटके बता रही हूँ। इसका प्रयोग आप किसी कुशल ज्योतिषी के निर्देशन से कर लाभ उठा सकते है।

1. दीपावली की रात्रि लक्ष्मी पूजन के समय 11 सफेद गुन्जा को रखें। दूसरे दिन स्नान आदि से निकृत्त होकर श्रद्धापूर्वक उन्हें अपनी तिजोरी में स्थापित कर लें ऐसा करने से अटूट लक्ष्मी का निवास होता है।

2. दीपावली प्रातः को गन्ने की जड को नमस्कार करके घर में लाकर रखें और रात्रि में लक्ष्मी पूजन के समय उसकी पूजा करें। ऐसा करने से घर में अटूट लक्ष्मी का निवास रहता है।

3. घर के मुख्य द्वार पर प्रतिदिन सरसों के तेल का दीपक जलाऐ तथा दीपक बुझ जाने पर बचे हुये तेल को पीपल के पेड़ पर संध्या के समय चढ़ा दें। इस प्रकार सात हफ्ते करने से भीषण आर्थिक संकटो से मुक्ति मिलती है।

4. ब्रह्म मुर्हूत में घर के मुख्य द्वार के ठीक दाहिने कच्चा दूध, जल और जौ प्रत्येक गुरुवार को श्रद्धापूर्वक डालने से उस घर में लक्ष्मी व गणेश की कृपा बनी रहती है।

5. दीपावली की रात्रि लक्ष्मी पूजन के पश्चात निशी थकाल में निम्न यंत्र की माला जपें व वर्षभर करते रहें तो सुख समृद्धि अवश्य आयेगी ऊँ ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डायै विच्चे।

6. व्यवसाय में घाटा चोरी आदि कारकों से बार–बार धनहानि हो रही हो तो दीपावली की रात्रि को अपने गल्ले या तिजोरी के नीचे काली मुंजा के दो या अधिक दाने डाल देने चाहिये।

7. एकांक्षी नारियल का दीपावली की प्रातः कामिया सिन्दूर अक्षत एवम् लाल पुष्पों से पूजन करें तो धन लाभ होता है।

8. यदि आप धन संचय नही कर पा रहे हों तो आपको दीपावली के दिन रेशमी रुमाल में पूजा करी हत्था जोड़ी बांधकर घर में रखदें धन में दिनदूगनी रात चौगुनी वृद्धि होगी।

9. दीपावली की रात्रि काले तिल परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर सात बार ऊसार कर पीपल के नीचे छोड़ दे। धन हानि बंद हो जायेगी।

शेष पेज 20 पर.....

रोग नाशक मुद्रा

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष प्रभाकर
9837966404

मनुष्य का शरीर पाँच तत्वों से बना है। अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश। यदि इनमें से कोई भी तत्व अंसतुलित होता है तो शरीर में विकार (रोग) उत्पन्न होते है। मानव शरीर में इन तत्वों को हाथों में भी स्थान प्राप्त है जिनके जरिये हम इन तत्वों को संतुलित कर सकते है। कुछ रोगों से सम्बन्धित मुद्राओं का वर्णन इस प्रकार है :–

(1) प्राण मुद्रा– यह मुद्रा अपने नाम अनुसार ही कार्य करती है इस मुद्रा को लगाने से शरीर में प्राण वायु का संचार होता है। आन्तरिक ऊर्जा का विकास होता है। इस मुद्रा को लगाने से नेत्र ज्योति का विकास होता है। नाटक का अभ्यास भी इस मुद्रा को लगा कर करने से विशेष फल मिलता है। रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है। शरीर में स्फूर्ति आती है। थकान दूर होती है।

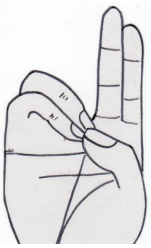

विधि– सुखासन या पद्मासन में बैठकर अंगुष्ठ के अग्रभाग को अनामिका व कनिष्ठिका अंगुली के अग्र भाग से मिलाये तर्जनी व मध्यमा को सीधा रखें। 3 बार दिन में 10–10 मिनट 3 बार करें।

(2) वायु मुद्रा– वायु मुद्रा को लगाने से वायु संबंधी समस्त विकारों का नाश होता है। गठिया, संधिवात, पक्षाघात आर्थराइटिस, कम्पवात, शियाटिका, घुटने के दर्द तथा गैस बनना दूर होता है। गर्दन व रीढ़ की हड्डी के दर्द में भी लाभ करता है।

विधि– तर्जनी अंगुली को अगुष्ठ के मूल भाग में लगायें तथा अंगुष्ठ से हल्का दबाव रखें। 2 बार– 15–15 मिनट करें।

(3) ज्ञान मुद्रा– ज्ञान मुद्रा मस्तिष्क का विकास करती है। एकाग्रता, नकारात्मक विचार कम। सिरदर्द, अनिद्रा, क्रोध तथा द्वेष का नाश होता है। स्मरण शक्ति तेज तथा दिव्य दृष्टि की प्राप्ति होती है। मस्तिष्क रोगियों के लिए लाभ दायक है। तथा विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी है।

विधि– सुखासन या पद्मासन में बैठकर दोनों हाथों को घुटनों पर रखें तर्जनी अंगुली के अग्रभाग को अगुष्ठ के अग्रभाग पर लगायें आँख बन्द रखें **ऊँ** का उच्चारण कर सकते है। 2 बार 15–15 मिनट पर करें।

❋❋❋

लक्ष्मी जी की उत्पत्ति कब और कैसे

डॉ. श्रीमती रेखा जैन ''आस्था''
ज्योतिष प्रभाकर, वास्तुशास्त्राचार्य
फोन नं. 0562 3250546

दीपावली का महान पर्व आने वाला है। यह तो सभी जानते हैं कि दीपावली के पर्व पर विशेष रुप से धन की देवी लक्ष्मी की पूजा उपासना की जाती है। हर कोई यही चाहता है कि लक्ष्मी माँ उस पर प्रसन्न होकर वर्ष भर उस पर धन की वर्षा करती रहे, पूरे वर्ष उसके घर में लक्ष्मी जी का स्थायी रुप से निवास हो इसी कामना से लक्ष्मी को लुभाने के विभिन्न प्रयत्न किये जाते हैं। सभी घर की सफाई करते है। नया रंग रोगन कराते है। घर में नयी–नयी वस्तुएं लायी जाती हैं ये सभी कार्य लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए किये जाते है। लेकिन जिस लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए आप इतने यत्न प्रयत्न कर रहे हैं। क्या उसकी उत्पत्ति के बारे में आप कुछ जानते हैं कि लक्ष्मी कहाँ से आयी है? उनकी उत्पत्ति का क्या रहस्य है?

प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन से लक्ष्मी की उत्पत्ति के विषय में अनेक तथ्य प्रकाश में आते हैं। भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद में लक्ष्मी की उत्पत्ति का आभास श्री सूक्त द्वारा मिलता है जहाँ उन्हें पद्मसम्भवा कहा गया है।

लक्ष्मी जी की उत्पत्ति से सम्बन्धित प्राचीनतम कथाओं एवं व्याख्यानों में समुद्र मंथन की कथा का महत्वपूर्ण स्थान है। यह रोचक कथा रामायण, महाभारत, भागवत, मत्स्य, पद्म एवं विष्णुधर्मोत्तर आदि पुराणों तथा नैषध काव्य के समान अनके ग्रंथों से प्राप्त है। लक्ष्मी जी के जन्म से सम्बन्धित समुद्र मंथन की कथा विष्णु महापुराण में विस्तार पूर्वक प्राप्त है। समुद्र मंथन की जितनी भी कथायें मिलती है। वे सब थोड़ा अन्तर होने पर भी लगभग समान है।

कहा जाता है कि समुद्र मंथन के समय सर्वप्रथम विष निकला तद् उपरान्त सागर में से अनेक प्रकार के रत्न प्रकट हुए। इसके पश्चात कामधेनू, उच्चश्रुवा अश्व, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, शंख, धन्नवंतरि, शशि आदि निकले। तदनन्तर दसों दिशाओं को अपनी कांति से प्रकाशित करने वाली श्री लक्ष्मी जी उत्पन्न हुई उनको देखकर कुछ समय के लिए मंथन कार्य रुक गया। क्योंकि लक्ष्मी जी की अद्भुत छटा देखकर देवता और असुर दोनों ही होश खो बैंठे। सभी उन पर मोहित हो कर, उनकी प्राप्ति की इच्छा करने लगे तभी देवराज इन्द्र ने उनके लिए सुन्दर आसन उपस्थित किया, जिस पर भगवती माँ विराजमान हो गयी। देवताओं, ऋषियों ने पूजन की सभी सामग्री एकत्रित करके विधिपूर्वक माँ का अभिषेक किया। तद् उपरान्त सागर ने उन्हे वस्त्र तथा विश्वकर्मा ने कमल समर्पित किया।

मांगलिक वस्त्र, आभूषणों से सुसज्जित होकर उन्होने कमल की माला विष्णु भगवान के गले में अपर्ण कर दी भगवान नारायण ने भी उन्हें अपने वाये अंग में स्थान ग्रहण कराया और हृदय रुपी अचल पद प्रदान किया।

लक्ष्मी की कल्पना प्राचीन महाकाव्यों के युग में पूर्ण रुप से साकार हो चुकी है।

रामायण में रावण का पुष्पक विमान जो दिव्य विमान या उसे विभिन्न प्रकार के रत्नों तथा मणियों से अलंकृत किया गया था। इसकी सुन्दरता और भव्यता के प्रसंग में लक्ष्मी जी गजाभिषेक प्रतिमा का वर्णन मिलता है।

प्राचीन प्रमुख पुराणों में मत्स्य पुराण का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पुराण में लक्ष्मी से सम्बन्धित विस्तृत वर्णन मूर्ति करण के विधान के रुप में मिलता है।

यह तो शाश्वत सत्य है कि जिस समय किसी भी काव्य या पुराण में माँ लक्ष्मी का वर्णन किया है। उस समय वहाँ अपार हर्ष, उल्लास खुशियाँ का वर्णन अवश्य मिलता है। इसीलिए वर्तमान समय में भी सभी व्यक्ति लक्ष्मी को प्राप्त करके हर्ष उल्लास खुशियां और समृद्धि प्राप्त करना चाहते है।

दीपावली पर लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने के लिए कुछ वस्तुऐं जो दुर्लभ तो है परन्तु बहुत ही महत्वपूर्ण है।

1. श्री यंत्र **2.** कनक धारा यंत्र **3.** अष्ट लक्ष्मी यंत्र **4.** पद्मावती यंत्र **5.** धन्दा यंत्र **6.** व्यापार वृद्धि यंत्र **7.** ग्यारह लक्ष्मी कारक कौड़ियां **8.** लक्ष्मी फल **9.** तीन हकीक पत्थर **10.** एक लघु शंख **11.** एक मोती शंख **12.** पारद लक्ष्मी गणेश की प्रतिमा **13.** कामना पूर्ति कारक लघु पिरामिड **14.** एक तांत्रिक लघु नारियल **15.** लक्ष्मी उपासना से समृद्धि पुस्तक **16.** कमल गट्ठे की माला **17.** श्री यंत्र का विशाल चित्र **18.** लक्ष्मी पूजन कैसेट या सी. डी. **19.** श्री सूक्त **20.** स्फटिक मणि माला **21.** लक्ष्मी पिरामिड

उपरोक्त सभी चीजों द्वारा यदि दीपावली पर लक्ष्मी जी का पूजन पूरे विधि विधान, ध्यान से किया जाये तो निश्चित ही लक्ष्मी जी का बास आपके के घर पर पूरे वर्ष रहेगा और आप सुख चैन से जीवन व्यतीत करेगें। इसके साथ सभी पाठको को हमारी ओर से दीपावली की शुभ कामना। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

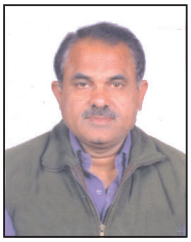

छुई-मुई काया-दूध की माया

डॉ. सतीश शर्मा
पशुधन प्रसार अधिकारी
पशुपालन विभाग उ. प्र.
मो. 9412254180

भारतवासियों को इस बातका सबक सीखना चाहिये कि विदेशों में सभी जगह गोदुग्ध की डेयरी का विकास हुआ है, परंतु हमारे यहाँ गाय बेचकर भैंस खरीदी जा रही है जिसके असर से नयी पीढ़ी आलसी और मंद–बद्धि होती जा रही है। गाय का तो मूत्र भी अमृत–समान है। शरीर सुडौल, सुन्दर और चुस्त बनाना हो तो गायका दूध ही पीयें यहाँ संक्षेप में दुग्ध–चिकित्सा के कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं।

जिगर में विकार– पाचन संस्थान के सभी दोष गोदुग्ध से दूर किये जा सकते हैं। भारतकी देखा–देखी रुस ने दूध–चिकित्सा कर के सारे यूरोप में इसका प्रचार किया है। 'कुछ मत खाइये और केवल दूध पीते रहिये। शहद का जी भर के प्रयोग करें। जिंगर तिल्ली, गुर्दे आदि सही काम करने लगेंगे।'

जुकाम– कुछ डॉक्टर जुकाम–नजला में दूध की मनाही कर देते हैं, जबकि जुकाम में पेट को स्वच्छ रखने का काम दूध आसानी से कर देता है। जुकाम में दूषित पानी नाक से बहने दें और दूधमें शहद घोलकर पीते रहें। भोजन सादा करें, आँतों और नस–नाडियों की पूरी सफाई कर डालें। तीसरे दिन से सब विकार अपने–आप दूर होने लगेंगे। गोलियाँ खाकर जुकाम हर्गिज न रोकें, नही तो दूषित पानी नाक से बहने की बजाय खून मे जहर की तरह घुल जायगा। बुखार अलग तड़पायेगा।

डिप्थीरिया– आम बोली में इसे पसली चलना या हब्बा–डब्बा भी कहा जाता है। बच्चों का यह रोग जानलेवा भी होता है। इससे बच्चे का दम घुटना रहता हैं और आँखें बाहर निकल आती हैं। बुखार जोरों का रहता है। 2 चम्मच गुनगुने दूध में 1/2 चम्मच घी ओर एक चम्मच शहद मिलाकर बच्चे को चटाना शुरु कर दें। गले और सीने की सफाई होते ही बच्चा सुख की साँस लेने लगेगा। घी से दुगुनी मात्रा में शहद डालें। गाय का गुनगुना घी बच्चे के सीने और गलेपर भी मलें। इससे कफ पिघलकर हट जायगा और श्वास–नली सहज हो जायगी।

तपेदिक– जो लोग तपेदिक रोगी को दूध पीने से रोकते हैं वास्तव में वे दूध की शक्ति को नही पहचानते। यूनान, रुस, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन, अरब और स्विटजरलैंड के विख्यात डॉक्टरों ने प्रयोगों के बाद साबित कर दिया है कि दूध से तपेदिक का भी सही इलाज किया जा सकता हैं। 50 ग्राम मिश्री और 10 ग्राम पिपली पीस–छानकर 250 ग्राम दूध में उतना ही पानी मिलाकर काढ़ा तैयार कर लें। दूध बच जाने पर इसे उतार लें और 10–15 ग्राम गोघृत में 20–25 ग्राम शहद घोल लें। इसे इतना फेटें कि दूध पर झाग पैदा हो जाय। इसको चूसते रहें और मनमें विश्वास पैदा करें कि आप अब स्वस्थ होने की राह पर चल पड़े हैं। फेफड़ों में छेद भी होंगे तो धीरे–धीरे भरने लगेंगे।

थकावट– चाहें कोई 50 कोस पैदल चलकर आया हो और उसका रोम–रोम दुख रहा हो तो उसके गाढ़े दूध में ढेर सारी मलाई डालकर पीने को दें। इसके साथ ही परात में गुनगुना पानी डालकर 2 चम्मच नमक डालें। इस पानी में घुटनों तक पाँव और टाँगें मल–मलकर धोयें। सारी थकान निकल जायेगी।

धतूरे का विष– गाय के दूध मे गाय का ही घी मिलाकर पिलाते रहें। गोघृत–जैसा विषनाशक अमृत शायद ही कोई दूसरा हो।

नकसीर– एक कप उबले दूध में पुराने–से पुराना घी डालें और कुछ पल नसवार की तरह सूँघें। जब दूध गुनगना रह जाय तो मिश्री घोलकर पियें। इससे रक्त का उबाल शान्त रहेगा और नकसीर भी नहीं फूटेगी। यदि एक मूली निराहार पेट खाते रहें और दूध में गाजर का रस पीते रहें तो नकसीर फूटने की नौबत नहीं आयेगी।

नाभि फूलना– बच्चे की नाभि फूलने लगे तो हर कोई गोघृत ही चुपड़ा करता है। आम गर्म घी मे हल्दी की चुटकी बुरक कर रुई का फाहा तह कर लें और सुहाता गर्म रह जाने पर नाभि पर रख कर ऊपर से पट्टी लपेट दें। नाभि सिकुड़कर सहज–रुप में आ जायगी।

नासूर– यह हड्डी तक पहुँच जाने वाला फोड़ा है। जिसके मवाद की बदबू से डॉक्टर और सगे–सम्बन्धी भी रोगी से दूर रहना चाहते हैं। पुराने गाय के घी द्वारा नासूर जल्द सूखेगा। पहले नीम–पत्तों के काढ़े से फोड़ा साफ करें उसके बाद कपड़ें की बत्ती बनाकर गोघृत में तर करके नासूर में डाल दें। दिन में 3 बार नहीं तो 2 बार बत्ती बदल दें। डेढ़–दो महीनों में फोड़ें की जड़ें सूख जायेंगी और घाव भरने लगेगा। दूध में घी डालकर पिलाते भी रहें, ताकि शरीर निर्विष रहे।

पेट में कीड़े– कड़वी कसैली दवाएँ खाने के बजाय दूध में शहद मिलाकर पीना शुरु कर दें। इससे धीरे–धीरे पुराने कीड़े मर जायेंगे, नये पैदा नहीं होंगे।

छाले फूलना– छाले चाहे गर्मी के उबाल से पड़ें हों या आग से जलने पर–दोनों स्थिति में गो–दुग्ध की मलाई या घी लेप दीजिये, जलन भी शान्त होगी, छाले बैठने पर घाव भी भर जायँगे।

एक कप पानी में 2 चम्मच दूध डालकर रोज चेहरेपर मल लिया करें, मुखडे पर से छावँ हट जायेगी और चेहरा भी दमकने लगेगा। दूध की मलाई लगाने से ओठ या गाल फटने की नौबत ही नहीं आयेगी। तेज बुखार में पुराने घी की मालिश करने से भी शरीर स्वस्थ रहता है। ❋ ❋ ❋

सफल विवाह के लिये गुण-मिलान ही काफी नहीं

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

विवाह मानव जीवन का एक पड़ाव है जिसके वाद इन्सान अपनी पूर्व की जीवन शैली को छोड़ कर एक नये जीवन के सफर पर चलता है।

हर स्त्री या पुरुष विवाह के समय अपना जीवन एक अन्जान व्यक्ति के साथ सिर्फ यह सोचकर जोड़ता है कि मेरा हम सफर जीवन में सदैव मेरा साथ निभायेगा। मेरे हर सुख–दुःख को अपना सुख–दुःख समझेगा और जिन्दगी में आने वाली सभी कठिनाइयों का मिलकर मुकाबला करेगा। विवाह को पड़ाव इसलिये कहा गया है क्योंकि विवाह से पूर्व व्यक्ति सिर्फ अपने लिये सोचता है, स्वयं के लिये जीता है किन्तु विवाह के पश्चात वह अपने परिवार के लिये अपनी आने वाली संतती के लिये जीता है। पर आज विवाह का मतलब ही बदल गया है। रोज हम हमारे समाज में कई मामलों में देखतें हैं कि व्यक्ति तनाव ग्रस्त वैवाहिक जीवन के फलस्वरुप हत्या और आत्महत्या जैसा अपराध भी कर देते हैं। तलाक, अलगाव, दूसरा विवाह, झगड़ा आये दिन हम देखते हैं। तमाम ऐसी परिस्थितियों के लिये जिम्मेदार हैं हमारी आधुनिक शैली, समाज को पथभ्रष्ट करती टी. वी. संस्कृति, ऐसे धारावाहिक जिनका कोई अर्थ नही है, जिनकी तरफ इन्सान खिचता चला जा रहा है और आधे से ज्यादा समय वही टी. वी. देखने में ही गुजारता है। इसका पूरा प्रभाव हमारे समाज, संस्कृति, बच्चों आदि पर पड़ता है धारावाहिको की उल्टी–सीधी कहानियों का कोई तत्व नही होता पर व्यक्ति अपनी रीयल जिन्दगी में इसको उतार लेता हैं।

हमारे देश में 80 प्रतिशत शादियां सिर्फ गुण–मिलान के आध ाार पर कर दी जाती हैं जो कि किसी भी गली–मुहल्ले में किसी मन्दिर में बैठे पुजारी से मिलवा लिये जाते हैं क्योंकि प्रायः सभी मन्दिरों में पुजारी के पास पंचाग होता है और सभी पंचांगों में गुण–मिलान की सारणी होती है, मात्र वो सारणी देखकर जो कि एक आम आदमी भी देख सकता है पुजारी जी कह देते हैं कि लड़के–लड़की के 28 गुण मिल रहे है कोई दोष नही हैं आप विवाह कर सकते हैं और मात्र इतने से गुण मिलान मानकर किसी के भाग्य का निर्णय हो जाता है, और विवाह हो जाता है। बाद में परिणाम चाहे जो हों यहाँ मैं यह कहना चाहुँगी कि मेरे उक्त कथन का तात्पर्य यह कतई नही हैं कि मैं गुण–मिलान को आवश्यक नही मानती या गुण–मिलान का कोई औचित्य नही है, बल्कि मेरा भी

शेष पेज 22 **पर**.....

उपवास करना भी आवश्यक है

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

उपवास शरीर को सारे कार्यो से विश्राम देकर कुछ समय के लिए भोजन पचाने की क्रिया से विश्राम दिला देता है। यदि उपवास केवल जल पर रहकर ही किया जाये, तो बिना किसी उपचार के शरीर के विकार बाहर निकल जाते हैं और शरीर निरोग हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को सप्ताह में एक दिन अवश्य उपवास करना चाहिए–इसका आध्यात्मिक महत्व तो है ही, साथ ही शरीर शोधन की क्रिया स्वतः ही पूरी हो जाती है।

भारत वर्ष के सनातन धर्मानुरागी प्रायः एकादशी, प्रदोष, पूर्णिमा या विभिन्न पर्वो पर व्रत किया करते हैं। सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार तथा रविवार को उपवास करने वालों की संख्या भी कम नहीं है। उपवास करने से अन्न दान का फल भी उपवासी को प्राप्त हो जाता है, क्योंकि जो अन्न बचता है उसका उपभोग अप्रत्यक्ष रुप से जरुरत मन्द व्यक्ति ही करता है।

चैत्र एवं क्वार के महीने प्रारम्भ होते ही मौसम के परिवर्तन का संकेत देते हैं। इन महीनों के प्रथम दिवस से ही नव रात्रि पर्व प्रारम्भ हो जाता है। इस पर्व में नौ दिन के उपवास शरीर शोधन की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। उपवास का पारायण चिकनाई एवं शक्कर युक्त (मीठे) पदार्थो से नहीं करना चाहिए, बल्कि केवल जल और फल का सेवन ही शास्त्र सम्मत है।

नव रात्रों में जौ बोने का एक वैज्ञानिक कारण है, जिसको हमारे ऋषियों ने आध्यात्मिकता से जोड़ दिया है। परन्तु हम ज्वारे बोने का महत्व और उसके प्रयोग की विधि हम सभी प्रायः भूल गये हैं। उपवास तोड़ने के लिए ही गेंहूँ या जौ के ज्वारे बोकर तैयार किए जाते हैं। इन ज्वारों के रस को पीकर ही हमें उपवास तोड़ना चाहिए।

जौ के ज्वारों का रस सारी वनस्पतियों से रसों अधिक पेट शोधक, रक्त शोधक, रोग निरोधक और शक्तिवर्धक होता है। इसके नियमित सेवन से कैंसर रोग तक समाप्त हो जाता है। आम तौर पर 50–60 ज्वारों को धोकर, थोड़े पानी के साथ पीसकर (मिक्सी में न पीसें) व निचोड़कर प्राप्त रस को एक बार में सेवन किया जाता है। आवश्यकतानुसार, इस रस को प्रातः व सायं (दिन में दो बार) भी सेवन किया जा सकता है। इस लिए नव रात्रि के पूरा होने पर बोये हुए ज्वारों को नदी के जल में प्रवाहित न करें, बल्कि उनका रस निकाल कर स्वयं सेवन करें। तथा महाप्रसाद के रुप में औरों को भी वितरित करें।

पेट या नाड़ियों में जो विकार या दोष पैदा हो जाते हैं, आयुर्वेद के अनुसार उनको दूर करने के लिए उपवास और पंचकर्म से निदान कराया जाता है। स्वास्थ्य लाभ के लिए व्यक्ति को अपनी दिन चर्या भी नियमित और संयमित रखनी चाहिए। यद्यपि जीने के लिए आहार आवश्यक है, तथापि उचित आहार से ही मनुष्य निरोग रह सकता है। अनुचित आहार का एक मात्र उपचार निराहार यानी उपवास करना ही है। ❋❋❋

16 अक्टूबर - 15 नवम्बर

मेष (Aries)– चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन हानि होते हुये लाभ होने की संभावना रहेगी। कारोबार में लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें।

वृष (Taures)– इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में वायु विकार संबंधी परेशानी होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे।

मिथुन (Gemini)– क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। नई योजनाओं से लाभ होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय ठीक रहेगा।

कर्क (Cancer)– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

सिंह (Leo)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन हानि होने का भय रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी।

कन्या (Virgo)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। रोग का भय रहेगा। व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में शुभ रहेगा।

तुला (Libra)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। आय के बराबर व्यय होगा। मास के अन्त में विशेष हानि होने का भय रहेगा।

वृश्चिक (Scorpio)– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे। यात्रा होना भी संभव है। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है।

धनु (Sagittarius)– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मकर (Capricorn)– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। चोट से बचें। योजनाओं से लाभ होगा।

कुम्भ (Aquarius)– गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। पत्नि से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा।

मीन (Pisces)– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी। अपमान होने का भय रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषशास्त्राचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नवम्बर
16 महानवमी	**2** रमा एकादशी व्रत,
17 विजयदशमी,	**3** धन तेरस (धनवन्तरी जयंती)
18 पापकुशा एकादशी व्रत	**4** नरक चौदश
20 प्रदोष व्रत	**5** महालक्ष्मी पूजन (दीपावली)
22 काजौगरी व्रत, शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारम्भ	**6** श्री गोवर्धन पूजा (अन्नकूट)
	7 भाई दूज, **9**. श्री विनायक चौथ
26 करवाचौथ व्रत	**10** पाण्डव पंचमी, **11** सूर्य षष्ठी
30 अहोई अष्टमी	**12** जलराम जयंती
31 श्रीमती गांधी पुण्य दिवस, सरदार बल्लभ भाई पटेल जं.	**14** गोपाष्टमी, पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दि., बाल दिवस
	15 अक्षय नवमी

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अक्टूबर–28

गृह प्रवेश मुहूर्त

अक्टूबर–28,31नवम्बर–12,13,14

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अक्टू–9,15,18,20, 23

नवम्बर–8,10,14

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अक्टूबर–3,7,17,18

नवम्बर–4,8

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
16 ता. सू.उ. से 30–43	3 ता. 17–19 से सू.उ. तक
21 ता. 18–07 से सू. उ. तक	6 ता. सू.उ. से 10–55
22 ता. सू.उ. से 23 ता. सू.उ. तक	8 ता. सू.उ. से 8–27
27 ता. सू.उ. से 25–58	12 ता. 11–55 से सू.उ. तक
29 ता. सू.उ. से 25–29	13 ता. सू.उ. से 14–25

16 नवम्बर - 15 दिसम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– इस मास में आपको हानि होने का भय रहेगा। रोग होने का भय रहेगा। व्यवसाय मे रूकावटें आयेंगी। सम्पत्ति का लाभ होगा। कार्य में हानि होने की सभांवना रहेगी। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल होगें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– फालतू के विवादो से बचें। आय से ज्यादा व्यय करेगें। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा। नेत्र कष्ट रहेगा। मास के अन्त में हानि होने का भय रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में शरीरिक पीड़ा रहेगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। नेत्र कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। धन की हानि होना भी संभव हैं।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी। कारोबार मे हानि होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। पत्नि सुख की प्राप्ति होगी। सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी। मित्रों से अनबन होने की स्थिति बनेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्ति होगा। इस मास में शारीरिक कष्ट रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में आर्थिक हानि की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं। व्यर्थ के खर्चे बढ़ जायेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे– इस मास में क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। फालतू विवादों से परेशान रहेगें। पत्नि से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। धन लाभ होना भी संभव हैं।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। धन हानि होने की सभांवना रहेगी। व्यवसाय मे रूकावटें आयेगीं। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मास के अन्त में धन हानि होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस मास मे क्रोध शक्ति मे वृद्धि होगी। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। ऋण मे वृद्धि होने की संभावना रहेगीं। मित्रों से अनबन होना भी संभव हैं। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषशास्त्राचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नवम्बर	दिसम्बर
17 देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह	**1** विश्व एड्स डे, उत्पत्ति एका.व्र.
18 गुरुण द्वादशी (उड़ीसा),	**3** प्रदोष व्रत, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, विकलांग दिवस
19 प्रदोष व्रत, इंदिरागांधी जं.	**4** भारतीय नौ सेना दिवस
20 बैकुण्ठ चौदस	**5** अमावस्या व्रत,
21 पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती	**7** भारतीय झण्डा दिवस
23 श्री सांई बाबा जयंती	**9** श्री विनायक चतुर्थी व्रत,
25 श्री गणेश चतुर्थी व्रत	**10** मानवाधिकार दिवस
29 काल भैरवाष्टमी श्राद्ध, बैंक अर्द्धवार्षिक लेखाबंदी	**11** चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी, **12** भानु सप्तमी, **13** दुर्गाष्टमी, **15** हरि नवमी, गुरु घासीदास जं., सरदार पटेल पुण्य दिवस

ग्रहारम्भ मुहूर्त

नवम्बर–17,18,26,27
दिसम्बर–2, 10, 11, 12

गृह प्रवेश मुहूर्त

नवम्बर–17,18,19, 27
दिसम्बर– 2,10,11

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

नवम्बर–17,18,19 दिसम्बर–13

नामकरण संस्कार मुहूर्त

नवम्बर– 17,19,24
दिसम्बर–1,2, 5,12

सर्वार्थ सिद्ध योग

नवम्बर	दिसम्बर
16 ता. 23–10 से सू.उ. तक	1 ता. सू.उ. से 22–53
18 ता. सू.उ. से 27–57	10 ता. सू.उ. से 22–56
19 ता. सू.उ. से 29–40	14 ता. 7–24 से सू.उ. तक
22 ता. 7–39 से सू.उ. तक	
24 ता. सू.उ. से 25 ता. सू.उ. तक	
26 ता. सू.उ. से 6–54	

पराजय

शत्रु की शक्ति को जाने बिना.....

मामा की कलम से..

श्री विजय शर्मा

मो. 9412263505

"शत्रु की शक्ति को जाने बिना जो शत्रुता बढ़ाता है वो पराजित होकर अपमानित होता है।"

एक बार की बात है समुद्र के किनारे एक स्थान पर टिटहरी का एक जोड़ा रहता था। टिटहरी गर्भवती थी। जब उसके अण्डा देने का समय आया, तो उसने पति से कहा, "स्वामी! किसी सुरक्षित स्थान की खोज करो। जिससे मै बिना बाधा के सुखपूर्वक अण्डा दे सकूं।"

एक स्थान देखकर टिटहरा बोला,"प्रिये! सचमुच यह स्थान अण्डा रखने के लिए बढ़िया है।"

"यह स्थान ठीक नहीं है। यहाँ तो जब पूर्णिमा को ज्वार आता है, तो समुद्र की लहरें मतवाले हाथी तक को खींचकर ले जाती हैं। इसलिए हमें कोई दूसरा स्थान खोजना चाहिए।" टिटहरी पति की बात सुनकर बोली।

टिटहरा बोला, "क्या मैं समुद्र से बल में कम हूँ जो वह मुझे दुःख देगा?"

"स्वामी! तुममें और समुद्र में बहुत अन्तर है।" टिटहरी हंसकर बोली।

"तुम चिन्ता न करो। समुद्र में इतना साहस नहीं है कि वह मेरी सन्तान को बहा ले जाए। वह मुझसे डरता है।" टिटहरा बोला।

"स्वामी! यह जान लीजिए इस संसार में जो शत्रु की शक्ति को जाने बिना शत्रुता बढ़ाता है, वो पराजित होकर दुःख को पाता है। अनुचित काम का आरम्भ, अपने दुष्ट मित्रों से विरोध, बलवान् से बराबरी की इच्छा और स्त्रियों पर विश्वास ये चार मृत्यु के द्वार हैं।" टिटहरी ने पति को समझाया।

टिटहरी नहीं माना। टिटहरी ने पति के कहने पर वहीं कष्ट से अण्डे दे दिये। टिटहरी और टिटहरा की बात सुनकर समुद्र को भी क्रोध आ गया। उसने भी इनके अण्डे बहाकर निगल लिए।

तब टिटहरी पति से शोक प्रकट करती हुई बोली, "हे स्वामी! यह कैसी विपदा आ पड़ीं। समुद्र मेरे अण्डे निगल गया।"

"डरो मत, मैं कुछ करता हूँ।" पत्नी को आश्वासन देकर टिटहरा ने सभी पक्षियों को एकत्र किया और फिर पक्षियों के राजा गरुड़ के पास गया। वहां पहुंचकर टिटहरे ने सारी बात गुरुड़ जी को बतायी, "हे महराज!समुद्र ने मुझे बिना अपराध सताया है।" गरुड़ जी ने भगवान् विष्णु को सारी बता दी। विष्णु भगवान ने समुद्र को टिटहरी के अण्डे वापिस देने की आज्ञा दी। समुद्र ने भगवान की आज्ञा को सिर–माथे रखते हुए टिटहरी के अण्डो को लौटा दिया।

कथा सुनकर दमनक बोला, "इसलिये मैं कहता हूं कि जो शत्रु के पराक्रम और बल को जाने बिना शत्रुता करता है, वो साधारण शत्रु से भी पराजित हो जाता है।"

पिंगलत बोला, "लेकिन यह केसे जाना जाए कि वह द्रोह करने लगा है?"

दमनक बोला, "जब वह घमण्ड में ऐंठकर सींग मारने की मुद्रा में उतावला–सा होकर सामने आयेगा, तो आप स्वयं ही अनुमान लगा लेंगे कि उसके मन में आपके प्रति क्या विचारधारा उत्पन्न हो रही है?" इतना कहकर दमनक उठा और मन की ओर चल दिया। कुछ दूर चलने पर उसे संजीवक घास चरता हुआ दिखाई दियां दमनक भी अपने को कुछ चिन्तित–सा दिखाते हुए उसके पास पहुंच गया।

संजीवक ने उसे देखकर आदरपूर्वक पूछा– मित्र! कुशल तो है?"

"सेवकों को कुशलता कहां.....?"दमनक बोला।

संजीवक बोला, "क्यों क्या हुआ?"

"स्वामी के सेवक की सम्पत्तियां पराधीन होती हैं, मन सदा दुःखी रहता है और युद्ध की शंका से जीवन का भी भरोसा नहीं रहता है। धन पाकर कौन गर्वित नही होता, किस कामी को विपत्तियां नही घेरती, स्त्रियों ने किस का मन नहीं डिगाया, स्वामी का कौन प्यारा है, काल ने अपनी भुजाओं में किसे नही जकड़ा है और कौन भिखारी गर्वित हुआ है? मेरे ख्याल से ऐसा मनुष्य मुश्किल ही मिलेगा, जो दुर्जन के फंदे में फंसकर सकुशल लौटा हो।" दमनक चिन्तित स्वर में बोला।

संजीवक बोला, "मित्र! कहो तो क्या बात है?" "मैं अभागा क्या बोलूं? दमनक प्रत्युत्तर में बोला। "कुछ तो बताओं....? सजीवक ने पूछा। "जैसे समुद्र में डूबता हुआ मनुष्य सर्प का सहारा पाकर न तो उसे छोड़ सकता हे, न पकड़ सका है, वैसे ही इस समय में हूं। यानी कुछ समझ में नहीं आ रहा कि कया करुं..? दमनक बोला।

कुछ देर शान्त रहकर पुनः बोला, "एक तरफ स्वामी विश्वास तो दूसरी तरफ बन्धु का विनाश हो। क्या करुं, कहां जाऊ, मैं तो इस दुःख सागर में दुविधा की स्थिति में पड़ा हूं।" इतना कहकर दमनक गहरी सांस लेकर बैठ गया। "मित्र! फिर भी मन की बात विस्तारपूर्वक कहो"। सजीवक बोला।

दमनक ने बहुत छिपाते–छिपाते कहा, "वैसे तो स्वामी की गुप्त बात बतानी नहीं चाहिये, तो भी तुम मेरे भरोसे से आये हो इसलिये मुझे परलोक की चिन्ता करते हुए तुम्हारे हित की बात कहनी चाहिए। सुनो, तुम पर क्रोधित महाराज पिंगलक ने एकान्त में मुझसे कहा कि मैं सजीवक को मारकर आपके परिवार को दूंगा।"

दमनक की बात सुनकर संजीवक को बहुत दुःख हुआ।

संजीवक की बात सुनकर संजीवक ने मन में विचारा–कह तो यह ठीक रहा है। कहीं से दुर्जनता तो नही कर रहा। हो सकता है न कर रहा हो। बिना व्यवहार के निर्णय नहीं हो सकता। वैसे भी स्त्रियां दुर्जनों के पास जाती हैं। प्रायः राजा कुपात्रों का पालन करता है, धन कृपण के पास रहता है और इन्द्र पहाड़ व समुद्र में बरसता है। कहीं–कहीं दुर्जन सुन्दर स्त्रियों के नयनों मे काजल की तरह शोभा पाते हैं। यह विचार कर संजीवक बोला, "ये क्या मुसीबत आन पड़ी। राजा बहुत मन से सेवा करने पर भी प्रसन्न नहीं होता है।

इसमें कोई और आश्चर्य नहीं, क्योंकि राजा नाम की यह अर्पूव प्रतिभा है जो सेवा करने पर भी शत्रुता करती है। इसीलिए इस बात का कोई भेद नहीं जाना जाता है जो जिस कारण से क्रोध करता है वह उस कारण के समाप्त हो जाने पर प्रसन्न हो जाता है, लेकिन कोई बिना कारण के बैर करने लगे तो उसको कौन प्रसन्न कर सकता है। मैंने राजा का क्या उपकार किया, क्या राजा लोग बिना कारण ही उपकार करते हैं?"

दमनक बोला, "ऐसा ही होता है। कोई–कोई मनुष्य पण्डितों से उपकार किए जाने पर भी शत्रुता करता है और शत्रुओं में अपकार किए जाने पर भी प्रसन्न होता है। अव्यवस्थित चित्त वाले पुरुषों का चरित्र बहुत अद्‌भुत है और सेवा का काम योगियों से भी कष्ट से हो सकता है। दुष्टों के सामने सैकड़ों उपकार, मूर्खो के सामने सैकड़ों उपदेश, हितकारी वचन न मानने वालों के सामने सैकड़ों वचन और महामूर्ख के सामने सैकड़ों दुद्धियां नष्ट हो जाती हैं। चन्दन के पेड़ों पर सांप, जल में कमल और उसी में मगर भी होते हैं। राजा या विषय के भोग में गुण का नाश करने वाले दुर्जन ही होते हैं, सुख बाधा रहित नहीं होता है। जड़ सर्पो से, पुष्प भंवरों से, डालियां बन्दरों से और चन्दन का पेड़ दुष्ट जन्तुओं से घिरा रहता है। मुझे तो यह स्थायी वाणी से मीठा और पेट से कपटी जान पड़ता है। यह जान लो जो दूर से देखकर ऊंचा हाथ उठाए, प्रीति के नेत्रों में रस भरे, आधा आसन बैठने को दे, अच्छी तरह से मिले, आदर–सम्मान करें, भीतर में कपट और बारह से मीठी–मीठी बातें करना, कुल मिलाकर मायावी होना, यह सब तो दुर्जनों में होता है। विधाता ने हर विषय के उपाय की चिन्ता की है। जैसे दुष्कर नदी के पार होने के लिए नाव, अंधकार के आने पर दीपक, वायु न होने पर पंखा, घमण्डी हाथी का घमण्ड दूर करने के लिए अंकुश आदि। मेरा तो मानना है कि दुर्जनों की चित्त की शुद्धि में विधाता भी विफल हो गया है।"

संजीवक लम्बी श्वास भरकर बोला, "बहुत दुःख की बात है, मुझ शाकाहारी को शेर क्यों मारेगा? समान बल वाले, तो एक–दूजे का विरोध कर सकते हैं, किन्तु सबल और निर्बल में कैसा विरोध?" रुककर कुछ सोचने लगा–किसने पिंगलक को मेरे खिलाफ कर दिया, मैं नही जानता हूँ न स्नेह छूटे राजा से सदैव डरना चाहिए मन में पड़ी दरार और टूटी हुई चूड़ी को कौन जोड़ सका है? वज्र और स्वामी का तेज भयंकर ही होता है। वज्र तो एक ही स्थान पर गिरता है। पर स्वामी का तेज तो चारों तरफ फैलता है। अब तो संग्राम में मरना ही उचित है, आज्ञा मानना तो अनुचित ही है। शूरवीर युद्ध स्वर्ग को पाता है, बच जाए तो शत्रु को मारकर सुख पाता है। जब बिना युद्ध किये मृत्यु निश्चित है और युद्ध में भी बचने की आशा नहीं है, तो समझ लो युद्ध का उचित समय आ गया है। चतुर मनुष्य जब जान जाता है कि बना के कोई लाभ नहीं है, तो युद्ध करके ही मरना उचित समझता है। युद्ध में जीतने पर लक्ष्मी प्राप्त होती है और मरने पर अप्सराएं। ये काया क्षण–भंगुर है फिर भी युद्ध में मरने की क्या चिन्ता?"

यह सोचकर संजीवक बोला, "हे मित्र! वह मुझे मारना चाहता है, इस बात का ज्ञान मुझे कैस होगा?" दमनक बोला, "जब पिंगलक पूँछ उठाकर ऊंचे पंजे करके मुख फाड़कर तुम को अपनी लाल–लाल आंखों से देखे, तब तुम भी अपना पराक्रम दिखाना। तेजहीन बलवान् को कौन नहीं मार सकता। आग में पांव धरते ही जल जाता है, मगर तेज जाता रहे तो राख के ढेर पर हर कोई पांव रखकर निकल जाता है। यह सारी बातें गुप्त ही रखना। नहीं तो तुम मरोगे और मुझे भी ले डूबोगें।" यह कहकर दमनक करटक के पास चला गया।

दमनक को आता देखकर, करटक बोला– "क्या हुआ?" "मैंने दोनों के बीच में फूट के बीज बो दिये है।" दमनक बोला। "इसमें क्या संदेह है!" करटक बोला, कुछ रुककर पुनः बोला, "तुम ठीक कहते हो कि दुष्ट का कोई भाई नही होता, मांगने पर किसको क्रोध नहीं आता, धन से किसे घमण्ड नहीं होता और बुरा कर्म करने में कौन चतुर नहीं होता? धूर्त मनुष्य अपनी उन्नति के लिए धनवान को भी दुराचारी बना देता है, इसीलिए दुष्टों का सहवास अग्नि के समान क्या–क्या नहीं करता है। दुराचार सब अनर्थो की जड़ है।"

इसके बाद दमनक पिंगलक के पास जाकर बोला, "महाराज! वह पापी आ रहा है इसीलिए सम्भल कर बैठ आईये।" दमनक का इतना कहना था कि पिंगलक की आंखें क्रोध से लाल हो गई। पूंछ क्रोध के कारण अकड़ गयी। वह संजीवक की ओर बढ़ चला। पिंगलक को पूंछ उठाकर युद्ध के लिए तत्पर देखकर संजीवक भी युद्ध के लिए तत्पर हो गया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। उन दोनों के युद्ध में संजीवक को शेर ने मार डाला।

बाद में पिंगलक थककर दुःखी–सा होकर बैठ गया और फिर सोचने लगा–हाय! ये मैंने कैसा दुष्कर्म किया? जिस तरह हाथी को मारकर शेर व्यर्थ में पाप का भागी बनता है, वैसे ही स्वामी भी व्यर्थ की हत्या करके धर्म का उल्लंघन करता है और पाप का भागी बनता है और राज्य का सुख दूसरे ही भोगते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है, "उपजाऊ भूमि के हाथ से निकल जाने या गुणी सेवक की हत्या, दोनों ही स्वामी के लिए मरण समान हैं। नष्ट भूमि तो मिल सकती है पर मरा हुआ सेवक नहीं मिल सकता।"

पिंगलक को उदास बैठे देखकर दमनक उसके करीब आकर बोला, " यह कैसा न्याय है कि शत्रु को मारकर अब पश्चाताप कर रहे हैं। नीति कहती है कि राज्य की इच्छा करने वाले शत्रु को कभी जीवित न रखें, राजा का कार्य दण्ड देना है, यह तो कपटी मित्र था। माता, पिता, भाई, पुत्र चाहे कोई भी हो यदि वह राज्य की इच्छा करे, तो उसे मार डालना चाहिए। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सार को जानने वाले पुरुष को अत्यन्त दयालु नहीं होना चाहि, क्योंकि क्षमाशील पुरुष हाथ पर रखे हुए भोजन को भी नहीं खा सकता है। क्षमा करना तपस्वियों का गहना है, राज्य अपराध करने वालें पर क्षमा करना अनुचित है। स्वामी की नीति वैश्या की तरह विविध प्रकार की होती है अर्थात् कभी सच्ची, कभी झूठी, कभी कड़वी, कभी मीठी, कभी नरम, कभी हिंसा करने वाली, कभी दयालु, कभी धन लेने वाली और कभी खर्च करने वाली।"

इन सब बातों को कहकर दमनक ने पिंगलक को सन्तोष दिलाया। तब कहीं पिंगलक प्रसन्नचित्त होकर सिंहासन पर बैठा।

इतने में वन के अन्य पशु भी एकत्र हो गये। सभी ने जय–जयकार करनी शुरु कर दी। जय–जयकार सुनकर दमनक भी अपनी विजय की मस्ती में झूमने लगा। पिंगलक ने उसे पुनः मन्त्री बना दिया। दमनक तथा करटक ने पिंगलक की जीत के बहाने अपनी जीत के गीत अलापने शुरु कर दिये।

❋❋❋

शेष पेज 12 से आगे .....

10. धन वृद्धि हेतु श्रीयंत्र का पूजन नित्य करें। चमेली का इत्र, लालपुष्प, सुगन्धित धूप इत्यादि का पूजन में प्रयोग करें।

11. यह प्रयोग दीपावली से प्रारम्भ करें– श्री सूक्त का पाठ नित्य करें गले में श्री यन्त्र का ताबीज धारण करें। लक्ष्मी की कृपा सदैव आप पर बनी रहेगी।

12. दीपावली की रात्रि लक्ष्मी पूजन के पश्चात् प्रत्येक कमरें में शंख व घंटियां बजानी चाहिये। इससे अलक्ष्मी घर के बाहर निकलती है व लक्ष्मी का प्रवेश होता है।

13. मुख्य द्वार पर दीपावली के दिन कुंकुम से या सिंदूर से स्वास्तिक बनायें तथा बासमती चावल की एक ढेरी पर एक सुपारी में कलावा बांधकर रख दें। यह धन प्राप्ति का प्रयोग है।

14. दीपावली के दिन अपने पूर्वजों को याद करे तथा दिन में तर्पण करें ऐया करने से पितरों का आर्शीवाद प्राप्त होता है। घर में सुख शान्ति आती है। ❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे .....

आवश्यकता है ठीक इसी प्रकार आध्यात्मिक रोगों की निवृत्ति के लिए 'उपासना' की आवश्यकता हैं जैसे रोग अनेक हैं तो उनकी औषधियें भी अनेक हैं, किस रोगी को कौन औषधि देनी चाहिये यह निर्णय केवल सुयोग्य वैद्य ही कर सकता हैं, ऐंसे ही सनातनधर्म में भी उपासना मार्ग का निर्णय करना भी गुरुदेव के आधीन है। साधक को चाहिए कि वह किसी सुयोग्य गुरु को ढूंढ कर उसके सामने अपने समस्त आध्यात्मिक रोगों का बिना संकोच वर्णन कर दे। तब सुयोग्य चिकित्सक की भान्ति आध्यात्मिक रोगों का पारंगत अनुभवी गुरु साधक की योग्यता के अनुसार श्रवण, कीर्तन, स्मरण आदि जिस भी औषधि को उपयुक्त समझेगा उसके सेवन का परामर्श देगा। नारद जी ने जब वाल्मीकि जैसे असाध्य आधि से पीड़ित व्याध की चिकित्सा आरम्भ की तो उसे 'रामनाम जैसे पेटेन्ट सर्व–रोगहर औषधि की मात्राा के योग्य भी न समझा। अतः उसे 'मरा' कीही पुडिया दी, और उसी से 'वाल्मीक भै ब्रह्म समाना' हो गये। सो सनातनधर्म में उपासना प्रणाली की प्राकृतिक चिकित्सा को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए उसका आधार **'गुरुशिष्य सम्प्रदाय'** पर स्थिर किया गया है। इसलिए उपासना क्यों करनी चाहिये? इसका उत्तर है कि– आध्यात्मिक रोगों को दूर करने के लिये। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपनाभवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य दर्शन द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

शेष पेज 10 से आगे .....

नहीं करवाना चाहिए, क्योंकि गहरे रंगों का प्रयोग करवाने से बच्चों के मन–मस्तिष्क पर गहरा एवं प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

यथासंभव इस कक्ष में हल्के, आनन्ददायक और नेत्रों को सुकून देने वाले रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस कक्ष में हल्का हरा, हल्का पीला और सफेद रंग सर्वाधिक उपयुक्त हो सकता है। इन रंगों का का प्रयोग करने से बच्चे के अध्ययन में भी प्रगति होती है। उसका मन–मस्तिष्क सुचारु रुप से काम करेगा तथा बालक उद्ण्डी भी नहीं होगा। इस कक्ष में हरा रंग बुद्धि का प्रतिनिधत्व करता है। इस रंग के प्रभाव से बच्चों में अध्ययन के प्रति एकाग्रता बढ़ती है। लाल रंग जोश एवं उमंग का प्रतीक है। यह रंग बच्चों में सकारात्मक सोच और उत्साह की वृद्धि करता है। पीला रंग कक्ष में प्रकाश की वृद्धि करता है। इस दृष्टि से यह रंग अधिक उपयोगी माना जाता है। इस रंग से कक्ष के आकार में भी वृद्धि हो जाती है।

रसोईघर– रसोईघर का रंग–रोगन गृहस्वामिनी की राशि के अनुरुप ही होना चाहिए, क्योंकि गृहस्वामिनी का ही अत्धधिक समय इस कक्ष में व्यतीत होता है एवं वही हमारे लिए भोजन का प्रबंध भी करती है। रंगों में पीला रंग सर्वाधिक उपयुक्त है। यह रंग प्रकाशवर्द्धक होने के कारण अधिक प्रचलन में है। वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि/लग्न वाली गृहस्वामिनियों के लिए यह रंग उपयुक्त है। रसोईघर के लिए आसमानी रंग का भी प्रयोग किया जाता है। मेष, वृश्चिक एवं सिंह राशि वाली गृहस्वामिनियों को यह रंग नही करवाना चाहिएं इसके विपरीत तुला और वृषभ राशि वाली गृहस्वामिनियों के लिए यह रंग सर्वाधिक उपयुक्त है। रसोईघर में नीले रंग का प्रयोग मकर एवं कुंभ राशि वाली गृहस्वामिनियों के लिए सर्वाधिक शुभ है। वृषभ एवं तुला राशि वाली महिलाएँ भी इसे करवा सकती हैं। गुलाबी, लाल ओर कॉपर कलर सिंह, मेष और वृश्चिक राशि वाली महिलओं के लिए शुभकारी है। इसी प्रकार सफेद रंग कर्क राशि वाली महिलाओं के लिए शुभ है। तुला एवं वृषभ राशि वाली महिलाएँ भी इसे करवा सकती हैं। हरा रंग मिथुन एवं कन्या राशि वाली महिलाओं के लिए भाग्यशाली है, अतः वे इसे रसोईघर में करवा सकती हैं।

बाथरुम– वर्तमान समय में बाथरुम में सफेद रंग का प्रचलन अधिक है। साथ ही इसमें रंग–रोगन के अलावा टाइल्स का प्रचलन अधिक पाया जाता है। उसका एक कारण तो सुंदरता है ही एवं द्वितीय कारण जल का प्रभाव भी है, क्योंकि बाथरुम में फैले जल से दीवारों पर करवाया गया रंग खराब हो सकता है। इसलिए इसमें टाइल्स ही लगाई जाती हैं। टाइल्स का रंग दीवारों के रंग के अनुरुप होना चाहिए। सफेद रंग मिथुन, कन्या के अलावा सभी राशियों के लिए शुभ है। कर्क राशि वालों के लिए तो यह सर्वाधिक शुभ है। बाथरुम में आसमानी रंग भी करवाया जाता है। यह रंग वृषभ और तुला राशि वालों के लिए सर्वाधिक शुभ है। मकर और कुंभ राशि वाले भी इसे करवा सकते हैं। मेष सिंह और वृश्चिक राशि वालों को इसे नहीं करवाना चाहिए।

पिस्ता रंग मिथुन और कन्या राशि वालों के लिए भाग्यशाली है, तो क्रीम रंग धनु और मीन राशि वालों के लिए शुभ है। गुलाबी रंग मेष, वृश्चिक और सिंह राशि वालों के लिए शुभ हैं। दीपावली पर रंग–रोगन तो करवाना ही है। यदि हम वास्तु और ज्योतिष के उक्त नियमों का ध्यान रख लें, तो साज–सज्जा के साथ–साथ खुशहाली भी आ सकती है, अतः समझदारी यही है कि हम रंग–रोगन के समय उक्त नियमों का ध्यान रख लें। ❋❋❋

शेष पेज 15 से आगे .....

यह कहना है कि एक सफल विवाह के लिये गुण मिलान भी अत्यन्त आवश्यक हैं किन्तु इसके साथ यह भी कहना है कि सिर्फ गुण–मिलान ही काफी नही है बल्कि पूर्ण कुंडली मिलान उससे भी ज्यादा आवश्यक है।

यहाँ मैं पाठकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगी कि प्रायः एक दिन या चौबीस घंटो में एक ही नक्षत्र होता है। मात्र एक या दो घंटे ही चौबीस घंटों में दूसरा नक्षत्र होता है और गुण–मिलान सिर्फ किस नक्षत्र के किस चरण में जातक का जन्म हुआ है, उसके आधार पर होता है। किन्तु उन चौबीस घन्टों में बारह लग्नों की बारह लग्न कुण्डलियाँ बनती है। कहने का तात्पर्य यह कि उन चौबीस घंटों में जन्में सभी जातकों की जन्म नक्षत्र और जन्म राशि तो समान होंगी किन्तु उन सभी की कुंडलियाँ अलग–अलग होगी किसी के लिये गुरु, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल कारक ग्रह होगे तो किसी के लिये शुक्र, शनि या बुध कोई मांगलिक नही होगा। किसी की कुण्डली में राजयोग तो किसी की कुंडली में दरिद्र योग होगा। कोई अल्पायु होगा, कोई मध्यायु होगा, तो कोई दीर्घायु, तो किसी कुण्डली में उसका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा होगा तो किसी की कुण्डली में बहुत खराब होगा। किसी के द्वि–विवाह, त्रि–विवाह योग होता है तो कोई अविवाहित रहता है। कहने का तात्पर्य यह कि उन चौबीस घंटों में जन्में सभी जातकों को जन्म नक्षत्र तो एक ही होगा किन्तु सभी की कुण्डलियाँ और उनका भाग्य अलग–अलग होगा। यहाँ पुनः ध्यान देने योग्य यह बात है कि गुण–मिलान सिर्फ जन्म नक्षत्रों के आधार पर ही होता है ऐसे में यदि किन्ही दो लड़के–लडकी के गुण मिलायेंगे और उनके गुण मिल भी गये किन्तु उनकी कुण्डल्यिों में कोई दोष है तो वह विवाह कतई सफल नही हो सकता है।

मेरे व्यक्तिगत ज्योतिषीय अनुभवों में मैने सैकड़ों ऐसी कुण्डलियाँ देखी हैं जिनके गुण तो 28–28, 30–30 मिल जाते हैं किन्तु उनका वैवाहिक जीवन अतियन्त कष्टप्रद है। उनके तलाक के मुकदमे चल रहे हैं या तलाक हो चुके हैं या उनका जीवन ही खत्म हो चुका है और सैकड़ों ऐसी कुण्डलियाँ देगी गयी हैं जिके मात्र 8–8, 10–10 गुण ही मिलते हैं किन्तु फिर भी उनका पारिवारिक वैवाहिक जीवन सुखद, उन्नतिपूर्ण रहा है, चल रहा है।

अतः यहाँ मैं पुनः यह लिखना और कहना चाहुँगी कि मैं गुण मिलान के खिलाफ नही हूँ गुण मिलान भी आवश्यक है किन्तु मेरा पाठकों से सिर्फ यह निवेदन है कि मात्र गुण मिलान पर ही पूर्ण भरोसा नही करें किसी योग्य ज्योतिषी से बालक–बालिका की कुण्डलियाँ मिलवाकर ही उसके विवाह का निर्णय लें क्योंकि गुण–मिलान से ज्यादा आवश्यक है कुण्डलियों का मिलना और दोनों की कुण्डलियों में उनके वैवाहिक जीवन की स्थिति।

❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे .....

पारद श्री यंत्र – पारद श्री यंत्र जैसा कि इसके नाम से ज्ञात होता है कि यह लक्ष्मी को प्राप्त कराने का पारद श्री यंत्र है पूजा स्थल पर इसकी स्थापना कर विधिविधान से किया गया मंत्रो का जाप, हवन और सामान्य पूजन व दर्शन भी लाभकारी होता है। पारद श्री यंत्र की स्थापना से लक्ष्मी सम्बन्धी दोषों का निराकरण होता है, धन लाभ, धन की रक्षा और धन का संचय आदि के लिये पारद श्री यंत्र के सम्मुख विधिविधान से किया गया पूजन व मंत्र जाप लाभकारी होकर बौद्धिक क्षमता में वृद्धि करता है।

" ऊँ ह्री श्रीं क्लीं महालक्ष्मयै नमः"

पारद गणेश– दीपावली जैसे शुभ मुहूर्त में पारद से निर्मित गणपति का भी विशेष महत्व है अनेक विघ्न बाधा को समाप्त करने के लिये और भाग्य वृद्धि करने के लिये पारद गणेश की स्थापना करनी चाहिये पारद गणपति के सामने मंत्र का जाप व गणेश स्तोत्र का पाठ करने से व्यक्ति विद्यावान व बुद्धिमान बनता है क्योंकि व्यक्ति बुद्धिमान होने पर ही धन कमाता है और उसे बुद्धि के द्वारा सदुपयोग कर संसार में यश व कीर्ति को बढ़ाता है। व्यापारिक वृद्धि तथा घर परिवार की सुख समृद्धि के लिये " ऊँ गं गणपतये नमः मंत्र का जाप अतिशीघ्र प्रभावी होता है।

पारद लक्ष्मी पादुका– पारद से बनी लक्ष्मी पादुकायें भी शुभदायी मानी जाती है। घर अथवा व्यवसाय स्थल पर शुभ मुहूर्त में इन पादुकाओं की भी देवी लक्ष्मी जी के चरणकमलों की भाँति पंचामृत, धूप, दीप आदि से पूजन करें। पादुकाओं का मुख अपनी ओर रखरकर प्रतिदिन इन्हें प्रणाम व दर्शन करें इन पादुकाओं पर अंकित चिन्ह जैसे स्वास्तिक, कमल, कलश, चक्र, मत्स्य, त्रिकोण, त्रिशूल, शंख सूर्य ध्वजा आदि चिन्ह शुभलाभ के साथ–साथ मनोवाछित सफलता भी प्राप्त कराते हैं।

पारद लक्ष्मी– वैदिक ऋर्षियों ने आदि शक्ति लक्ष्मी को श्री कहकर अपार महिमा को गाया वही लक्ष्मी सम्पूर्ण चल अचल सम्पत्तियों व अष्ट सिद्धि व निधि की अधिष्ठात्री मानी गई है। शुभ मुहूर्त में स्थापित पारद लक्ष्मी की स्थापना और विधि विधान से पूर्ण श्रद्धा के साथ की गई साधना व्यक्ति को सौभाग्यशाली व धनवान बनाती है। पारद लक्ष्मी के समक्ष श्री सूक्त का पाठ व लक्ष्मी मंत्र "ऊँ श्रीं श्रीं श्रियै नमः का जाप अप्राप्त लक्ष्मी की प्राप्ति कराने में पूर्ण सक्षम है। व्यक्ति स्वयं ही इस प्रकार की आराधना कर लक्ष्मी सम्बन्धी दोषों का शमन कर लक्ष्मी अर्थात श्री युक्त बन सकता है।

पारद शिवलिंग– ऐसा माना जाता है कि पारद के शिवलिंग के दर्शन मात्र से ही व्यक्ति को सुख समृद्धि और धन धान्य सरलता से प्राप्त हो जाता है इसका नियमित अभिषेक व पूजन महामृत्युंजय मंत्र व शिव मन्त्रों का जाप करने से लक्ष्मी आगमन में आयी बाधायें समाप्त हो जाती हैं।

पारद पिरामिड – पारद पिरामिड जिस किसी भवन अथवा स्थान पर स्थापित हो वहाँ पर रहने वाले सभी व्यक्ति इसका जीवन पर्यन्त लाभ उठा सकते हैं। पारद पिरामिड को बिना मंत्र जप व अनुष्ठान के उपयोग किया जा सकता है। पारद पिरामिड सकारात्मक ऊर्जा से भवन के वास्तु दोषों को दूर करने का सक्षम उपाय है।

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला	50/- से 250/-
रूद्राक्ष माला (मध्यम)	300/- से 450/-
रूद्राक्ष माला छोटे दाने	650/- से 800/-
रूद्राक्ष- स्फटिक माला	150/- से 500/-
स्फटिक माला छोटी	150/-से 350/-
स्फटिक माला बड़ी	250/- से 1100/-
लाल चंदन माला	60/- से 200/-
हल्दी की माला	100/- से 300/-
कमल गट्टे की माला	60/- से 150/-

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र	500/- से 3100/- प्र.नग
स्फटिक लक्ष्मी	600/- से 1500/- प्र.नग
स्फटिक गणेश	600/- से 1100/- प्र.नग
स्फटिक शिव लिंग	300/- से 5,000/- प्र.नग
स्फटिक बॉल बड़ा	400/- प्र.नग
स्फटिक बॉल छोटी	300/- प्र.नग

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट	3100/-
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)	1100/-
नवरत्न अंगूठी	200/- से 550/-
काले घोड़े की नाल असली	550/-
काले घोड़े की नाल का छल्ला	100/-
श्वेतार्क गणपति	250/-
इंद्रजाल	150/-
बृहमजाल	150/-
गोमती चक्र	20/- जोड़ा
नाभि चक्र	20/- जोड़ा

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)	3,000/-
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम	1100/-, 1500/-
गणेश शंख	350/- से 650/-
लक्ष्मी शंख	550/- से 1,100/-

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच	1100/-
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच	1100/-
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच	1100/-
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट	2100/-
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में	1100/-
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच	1100/-
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित	1100/-
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित	1100/-
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक	1100/-
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच	1100/-

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)	25,000/- प्र.नग
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)	1100/- प्र.नग
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष	1500/- प्र.नग
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष	2500/- प्र.नग
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष	1500/- प्र.नग
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष	200/- प्र.नग
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष	50/- प्र.नग
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष	50/- प्र.नग
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष	20/- प्र.नग
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष	50/- प्र.नग
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष	200/- प्र.नग
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष	2,000/- प्र.नग

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग	300/- से 2500/- प्र.नग
पारद श्री यंत्र	600/- से 3100/- प्र.नग

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)	80/- प्र.नग
पिरामिड छोटे (पीतल)	120/- प्र.सेट
कार पिरामिड	150/- से 300/- प्र.सेट
स्टडी टेबल पिरामिड	400/- प्र.सेट

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल	150/-
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी	100/-
गऊ लोचन	200/-
एकाक्षी नारियल	500/- से 1,100/-

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट	50/-से 100/-
समृद्धि पेड़	70/-से 200/-
लाफिंग बुद्धा	80/-से 100/-
क्रिसटल बॉल	80/-
ग्लोब	60/-
पिरामिड शुभ-लाभ	40/-
लुक, फुक, साहू	170/-
लवबर्ड	70/- से 225/-
कछुआ	30/-से 50/-
तीन टांग का मेंढ़क	70/-

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262